talwinder

21 Jun 1975

10:30 AM

Balachaur

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 118429301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**21/06/1975**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**10:30:00 घंटे**
इष्ट	12:51:04 घटी
स्थान	**Balachaur**
राज्य	Punjab
देश	India

अक्षांश	31:03:28 उत्तर
रेखांश	76:18:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:24:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	10:05:12 घंटे
वेलान्तर	-00:01:31 घंटे
साम्पातिक काल	04:00:17 घंटे
सूर्योदय	05:21:34 घंटे
सूर्यास्त	19:31:13 घंटे
दिनमान	14:09:39 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	05:42:32 मिथुन
लग्न के अंश	10:44:35 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**वृश्चिक - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**अनुराधा - 1**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	साध्य
करण	कौलव
गण	देव
योनि	मृग
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	ना-नवीन
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1897	ज्येष्ठ	31
पंजाबी	संवत : 2032	आषाढ़	7
बंगाली	सन् : 1382	आषाढ़	6
तमिल	संवत : 2032	आनी	7
केरल	कोल्लम : 1150	मिथुनम	7
नेपाली	संवत : 2032	आषाढ़	7
चैत्रादि	संवत : 2032	ज्येष्ठ	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2032	ज्येष्ठ	शुक्ल 13

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 13
तिथि समाप्ति काल _____: 23:18:55
जन्म तिथि _____: 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: विशाखा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 07:28:49 घंटे
जन्म योग _____: अनुराधा
सूर्योदय कालीन योग ____: सिद्ध
योग समाप्ति काल _____: 09:16:01 घंटे
जन्म योग _____: साध्य
सूर्योदय कालीन करण ____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 11:47:25 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 07:32:57
भभोग _____: 59:33:33
भोग्य दशा काल _____: शनि 16 वर्ष 6 मा 27 दि

घात चक्र

मास _____: आश्विन
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: रेवती
योग _____: व्यतिपात
करण _____: गर
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: वृश्चिक
सूर्य _____: मकर
चन्द्र _____: वृष
मंगल _____: कुम्भ
बुध _____: वृश्चिक
गुरु _____: मीन
शुक्र _____: मेष
शनि _____: कर्क
राहु _____: वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

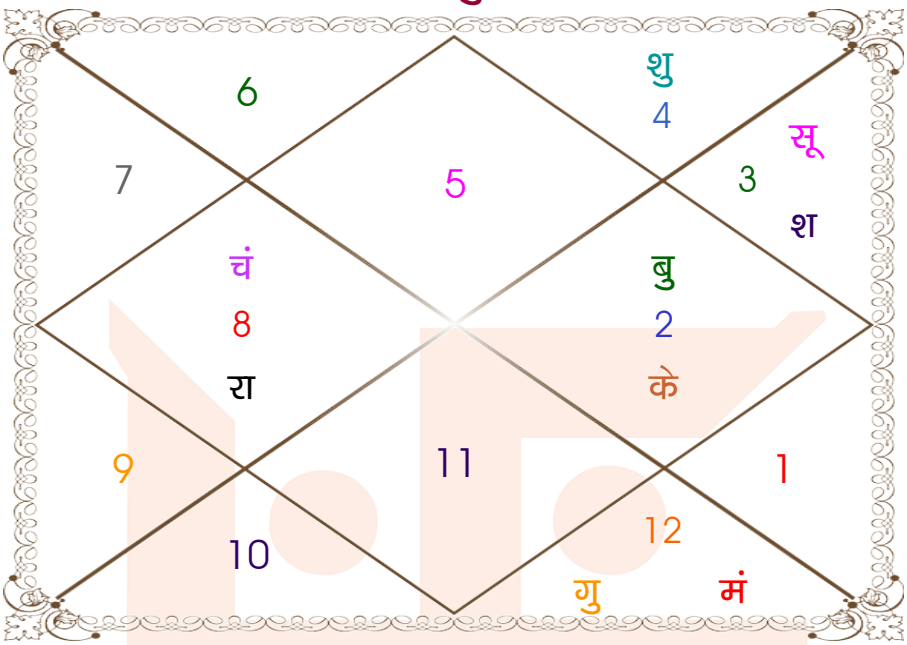

चन्द्र कुंडली

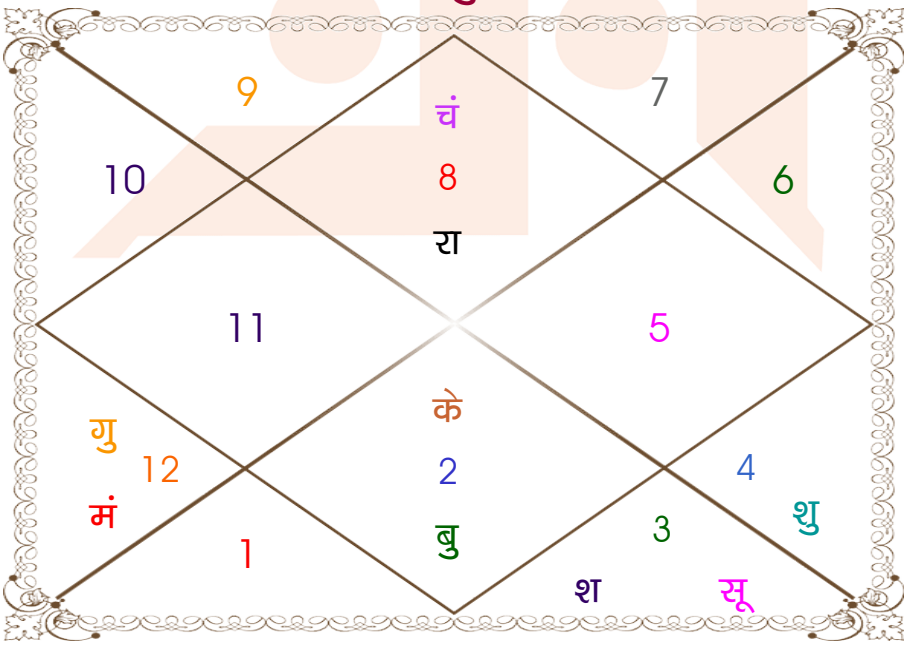

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

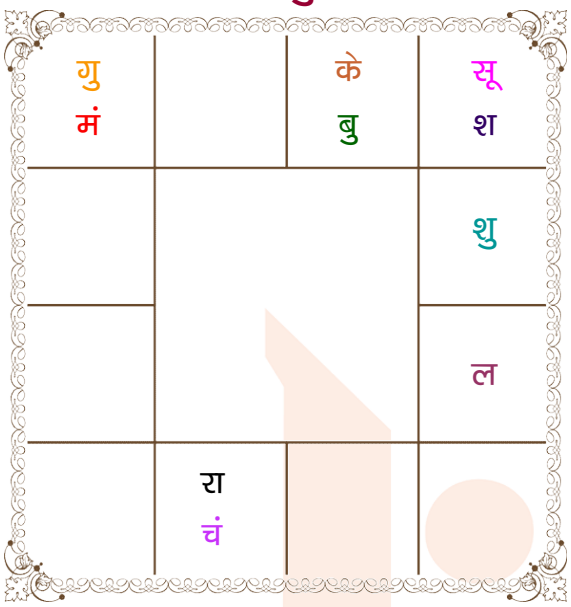

लग्न कुंडली

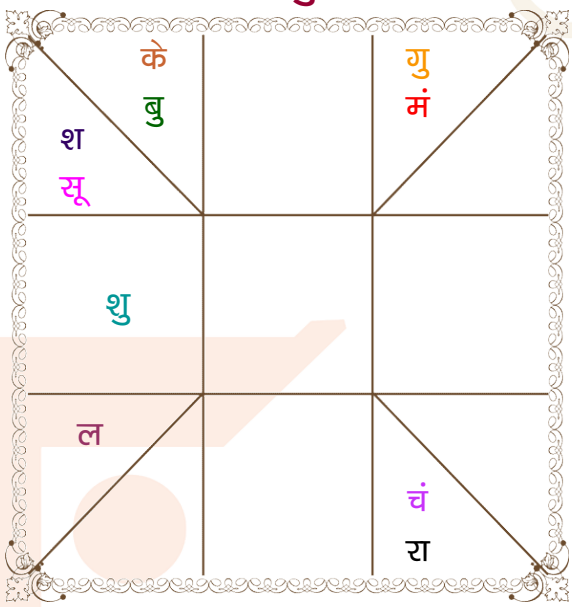

विंशोत्तरी
शनि 16वर्ष 6मा 27दि

शनि

21/06/1975

17/01/2093

शनि	17/01/1992
बुध	17/01/2009
केतु	17/01/2016
शुक्र	17/01/2036
सूर्य	17/01/2042
चन्द्र	17/01/2052
मंगल	17/01/2059
राहु	17/01/2077
गुरु	17/01/2093

योगिनी
भ्रामरी 3वर्ष 5मा 26दि

उल्का

17/12/2019

16/12/2025

उल्का	16/12/2020
सिद्धा	15/02/2022
संकटा	17/06/2023
मंगला	17/08/2023
पिंगला	17/12/2023
धान्या	16/06/2024
भ्रामरी	15/02/2025
भद्रिका	16/12/2025

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	10:44:35	307:50:26	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	---
सूर्य			मिथु	05:42:32	00:57:14	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	सम राशि
चंद्र			वृश्चि	05:02:04	13:30:26	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	नीच राशि
मंगल			मीन	29:19:31	00:43:30	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	मित्र राशि
बुध	व	अ	वृष	21:34:21	00:06:26	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि
गुरु			मीन	26:41:28	00:09:09	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	स्वराशि
शुक्र			कर्क	21:03:19	00:56:12	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
शनि			मिथु	25:51:31	00:07:29	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	केतु	मित्र राशि
राहु			वृश्चि	07:16:38	00:00:11	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	शत्रु राशि
केतु			वृष	07:16:38	00:00:11	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	सम राशि
हर्ष	व		तुला	04:56:58	00:00:49	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	सूर्य	---
नेप	व		वृश्चि	16:23:10	00:01:31	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
प्लूटो			कन्या	12:58:02	00:00:08	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	---
दशम भाव			वृष	08:38:41	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:31:07

लग्न-चलित

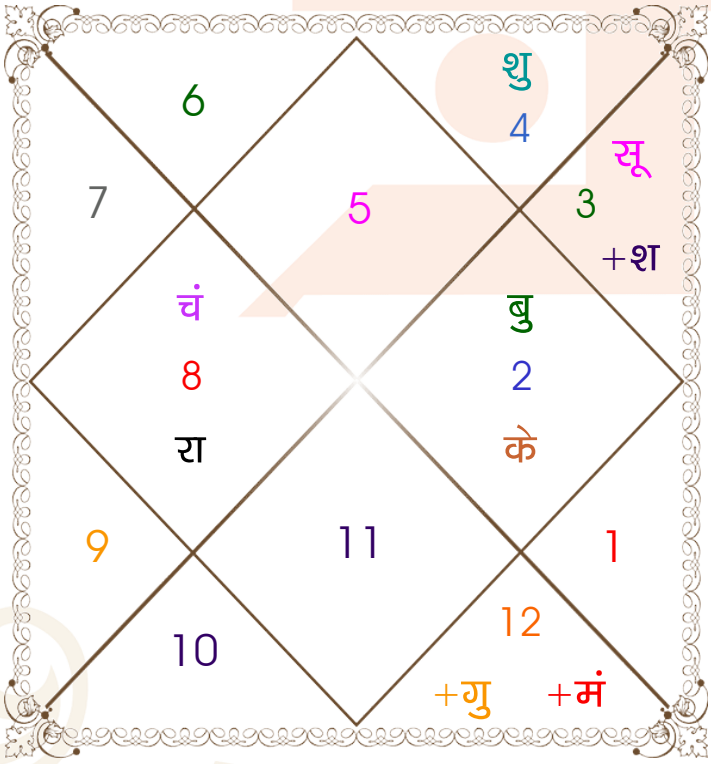

चन्द्र कुंडली

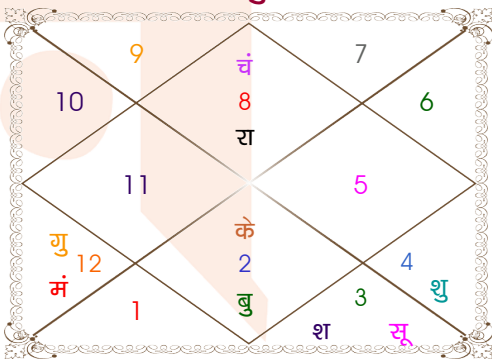

नवमांश कुंडली

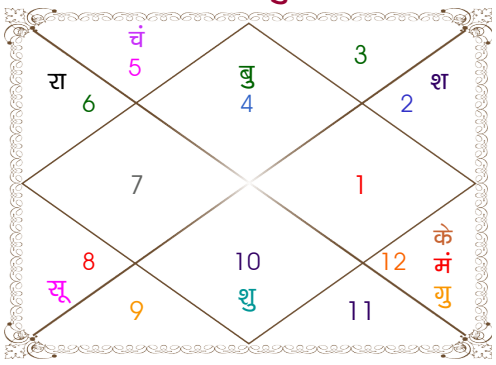

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	25:23:36	सिंह	10:44:35
2	सिंह	25:23:36	कन्या	10:02:37
3	कन्या	24:41:38	तुला	09:20:39
4	तुला	23:59:40	वृश्चिक	08:38:41
5	वृश्चिक	23:59:40	धनु	09:20:39
6	धनु	24:41:38	मकर	10:02:37
7	मकर	25:23:36	कुम्भ	10:44:35
8	कुम्भ	25:23:36	मीन	10:02:37
9	मीन	24:41:38	मेष	09:20:39
10	मेष	23:59:40	वृष	08:38:41
11	वृष	23:59:40	मिथुन	09:20:39
12	मिथुन	24:41:38	कर्क	10:02:37

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	10:44:35
2	कन्या	06:33:08
3	तुला	06:18:45
4	वृश्चिक	08:38:41
5	धनु	11:09:51
6	मकर	12:06:31
7	कुम्भ	10:44:35
8	मीन	06:33:08
9	मेष	06:18:45
10	वृष	08:38:41
11	मिथुन	11:09:51
12	कर्क	12:06:31

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली

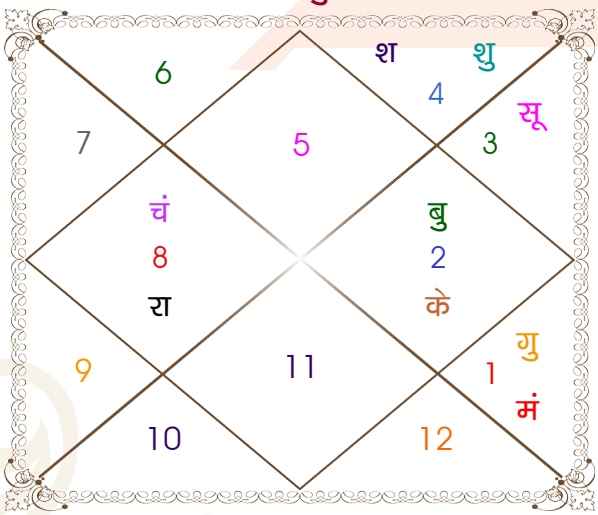

भाव कुंडली

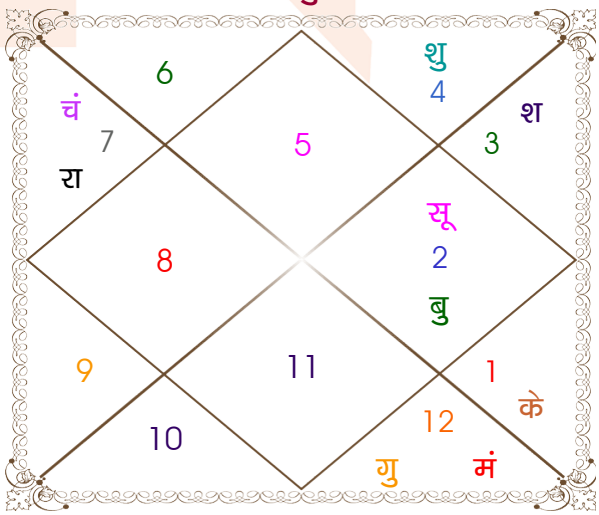

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	बाल	निपीदित	आगम	8.29	59 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	भीत	आगमन	0.05	37 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	बाल	मुदित	सभा	3.30	47 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	कुमार	विकल	उपवेशन	0.00	48 %
गुरु	अमात्य	धन	बाल	स्वस्थ	शयन	4.77	78 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	कुमार	खल	प्रकाश	1.17	29 %
शनि	भ्रातृ	आयु	मृत	मुदित	आगमन	2.44	53 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	9 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	निपीदित	सभा	0.00	9 %
कुल						20.01	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली

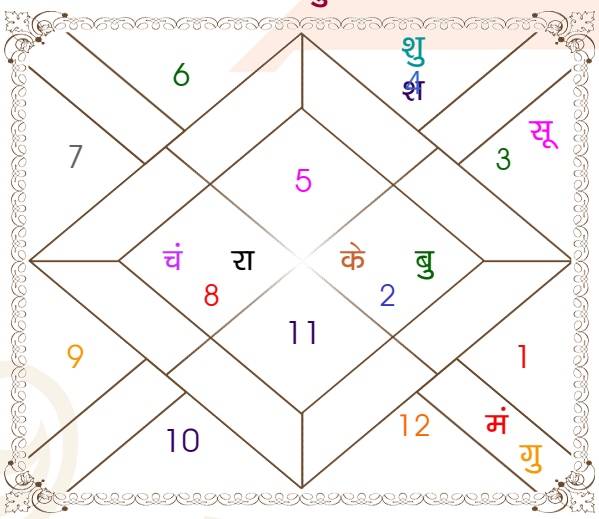

लग्न-चलित

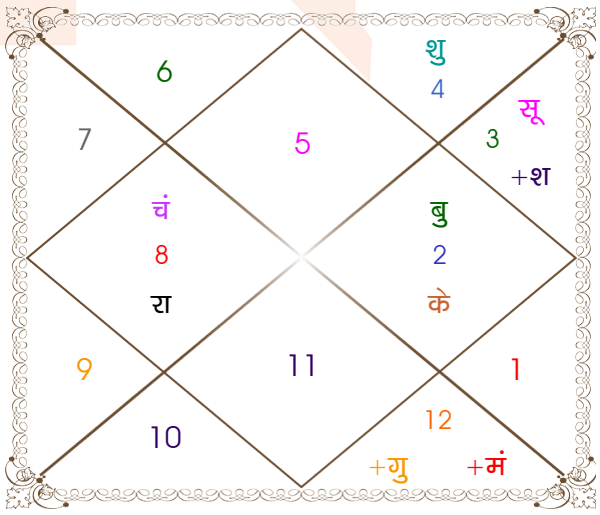

सुदर्शन चक्र

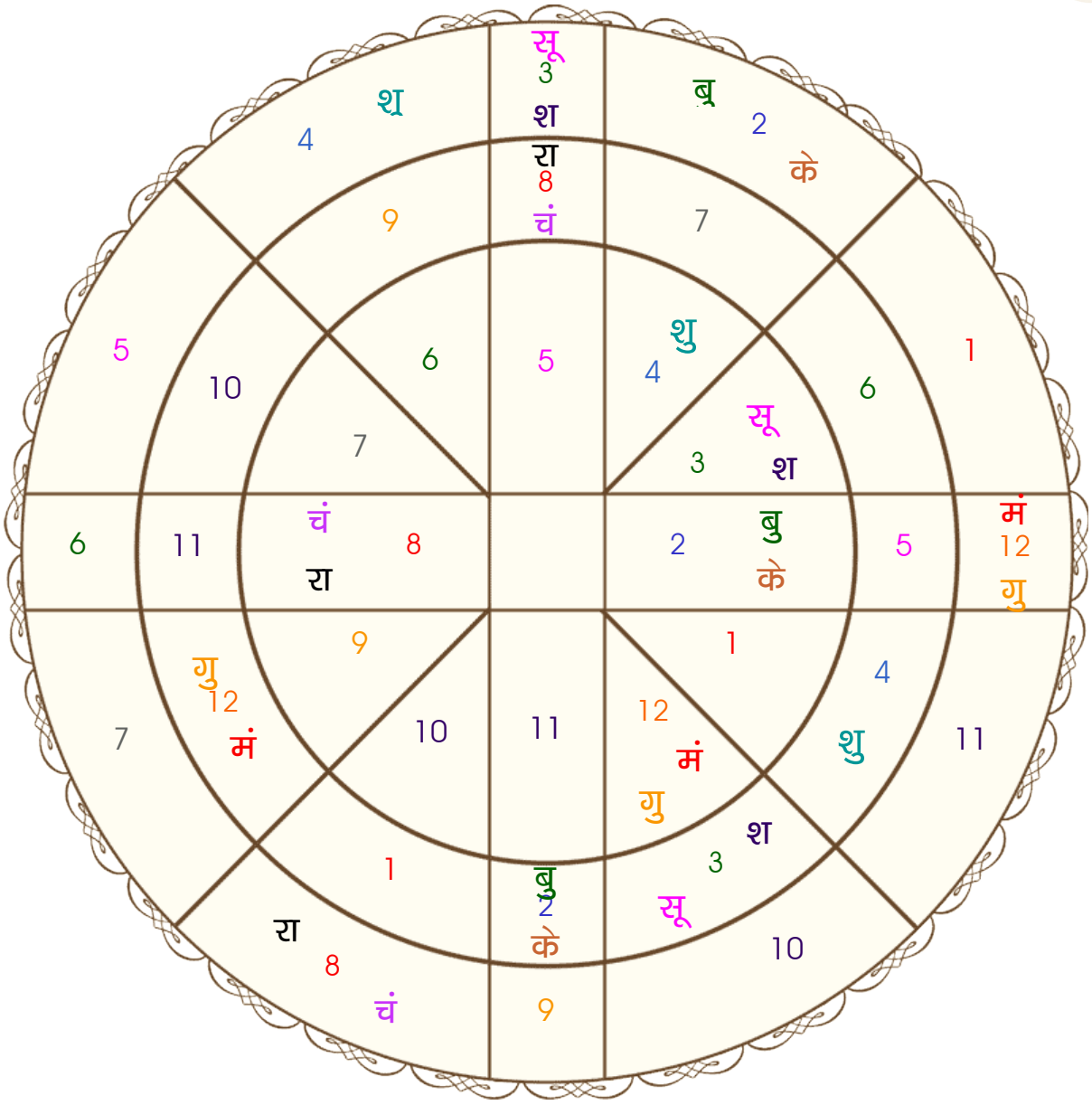

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शनि 16 वर्ष 5 मास 2 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	05:48:55	बुध	मंगल	चंद्र	राहु
चंद्र		वृश्चि	05:08:27	मंगल	शनि	शनि	राहु
मंगल		मीन	29:25:54	गुरु	बुध	शनि	राहु
बुध	व	वृष	21:40:44	शुक्र	चंद्र	शुक्र	गुरु
गुरु		मीन	26:47:51	गुरु	बुध	गुरु	बुध
शुक्र		कर्क	21:09:42	चंद्र	बुध	शुक्र	बुध
शनि		मिथु	25:57:54	बुध	गुरु	केतु	सूर्य
राहु		वृश्चि	07:23:01	मंगल	शनि	केतु	शुक्र
केतु		वृष	07:23:01	शुक्र	सूर्य	केतु	राहु
हर्ष	व	तुला	05:03:21	शुक्र	मंगल	सूर्य	राहु
नेप	व	वृश्चि	16:29:34	मंगल	शनि	गुरु	राहु
प्लूटो		कन्या	13:04:25	बुध	चंद्र	राहु	केतु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	सिंह	10:50:58	सूर्य	केतु	शनि	राहु
2	कन्या	06:39:31	बुध	सूर्य	बुध	गुरु
3	तुला	06:25:08	शुक्र	मंगल	चंद्र	केतु
4	वृश्चि	08:45:04	मंगल	शनि	शुक्र	चंद्र
5	धनु	11:16:14	गुरु	केतु	शनि	गुरु
6	मक	12:12:54	शनि	चंद्र	राहु	गुरु
7	कुंभ	10:50:58	शनि	राहु	शनि	बुध
8	मीन	06:39:31	गुरु	शनि	बुध	राहु
9	मेष	06:25:08	मंगल	केतु	राहु	शनि
10	वृष	08:45:04	शुक्र	सूर्य	शुक्र	राहु
11	मिथु	11:16:14	बुध	राहु	शनि	शुक्र
12	कर्क	12:12:54	चंद्र	शनि	मंगल	राहु

के.पी. अयनांश : 23:24:44

फॉरच्युना : मकर 10:10:30

लग्न कुंडली

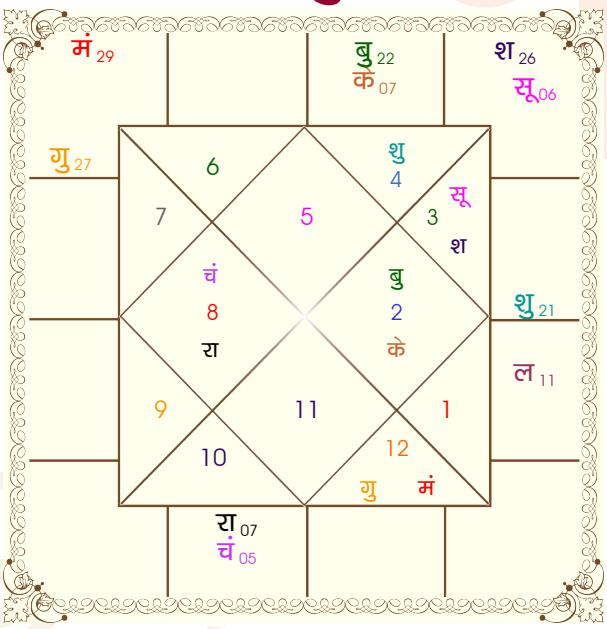

भाव कुंडली

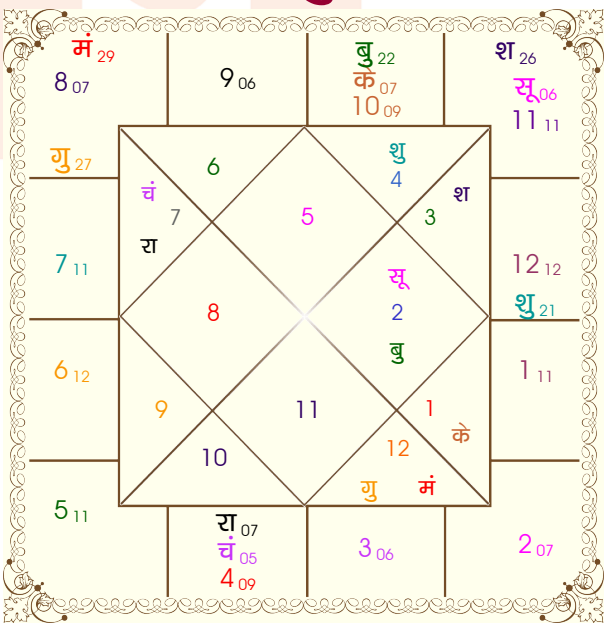

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- केतु-
2	मंगल- बुध- गुरु- शुक्र-
3	चंद्र, बुध, शुक्र- राहु,
4	सूर्य- मंगल-
5	गुरु- शनि-
6	चंद्र- शनि- राहु-
7	चंद्र- शनि- राहु-
8	सूर्य, मंगल, गुरु, शनि+
9	सूर्य- मंगल- केतु,
10	सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र+ केतु,
11	चंद्र, मंगल- बुध- गुरु- शुक्र- शनि, राहु,
12	चंद्र- बुध- शुक्र,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 4- 8, 9- 10,
चंद्र	3, 6- 7- 11, 12-
मंगल	2- 4- 8, 9- 10, 11-
बुध	2- 3, 10, 11- 12-
गुरु	2- 5- 8, 10, 11-
शुक्र	2- 3- 10+ 11- 12,
शनि	5- 6- 7- 8+ 11,
राहु	3, 6- 7- 11,
केतु	1- 9, 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	केतु
लग्न राशि स्वामी	सूर्य
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	शनि

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

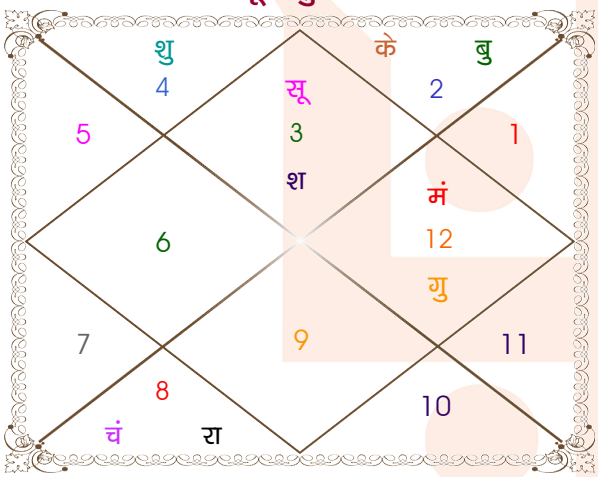

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

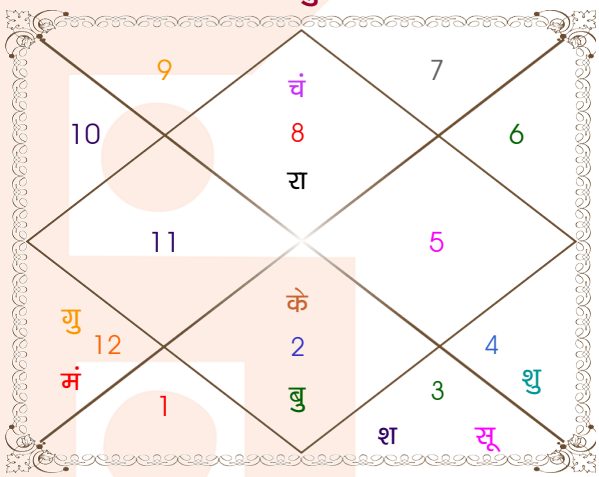

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

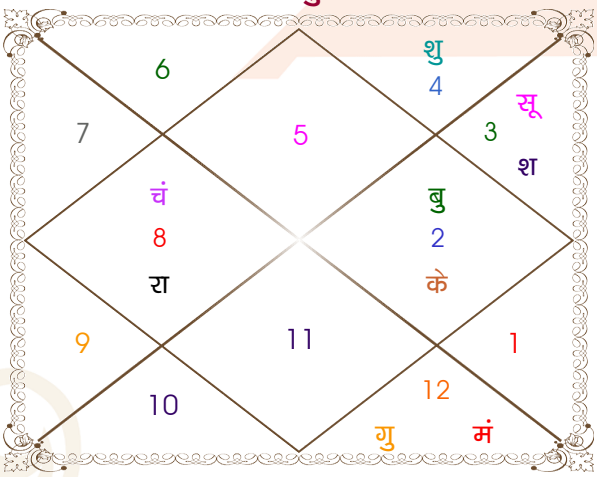

देह विचारः

होरा कुंडली

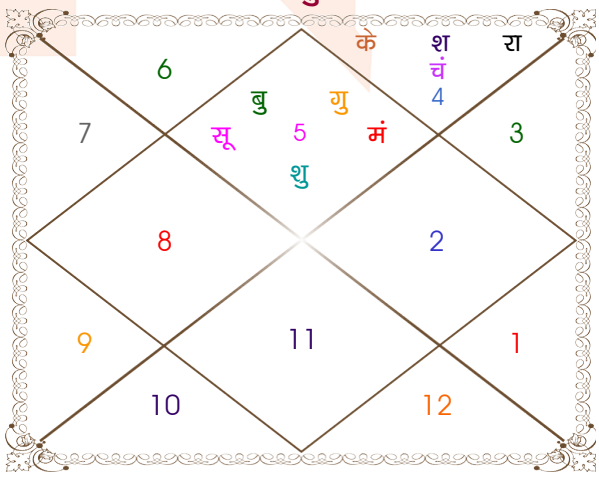

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

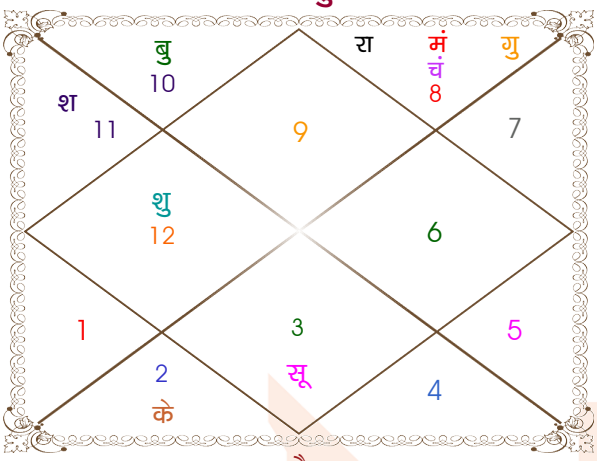

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

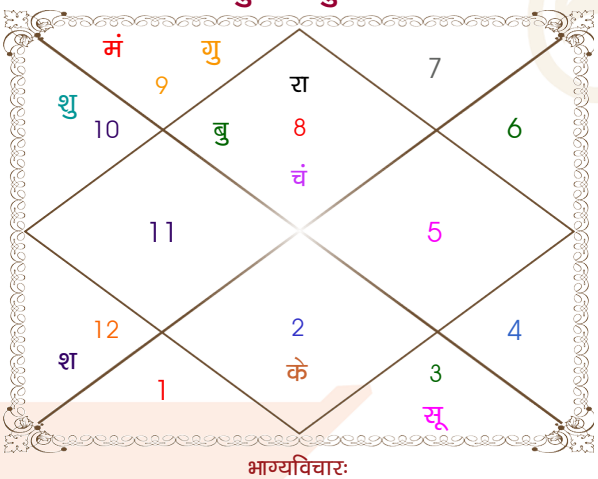

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

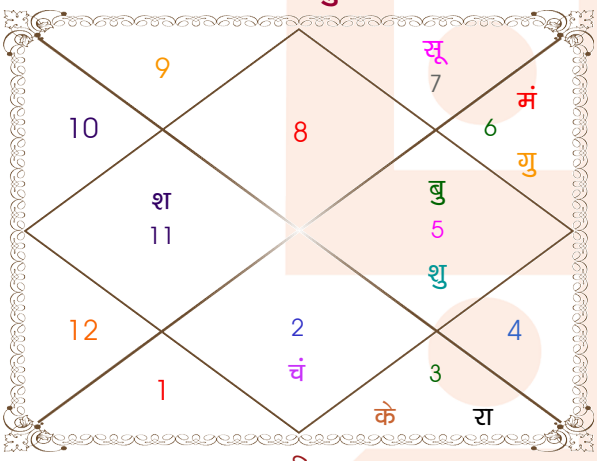

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

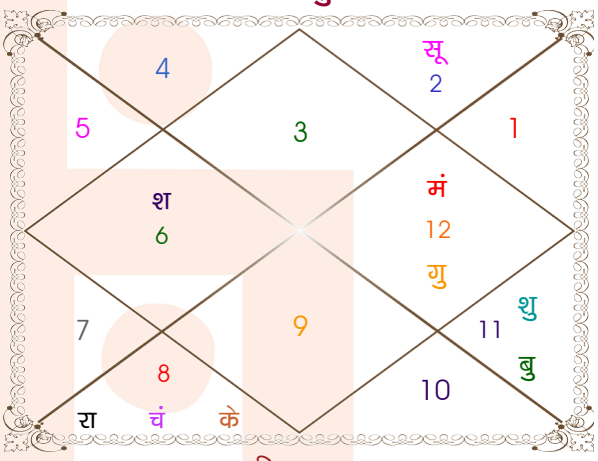

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

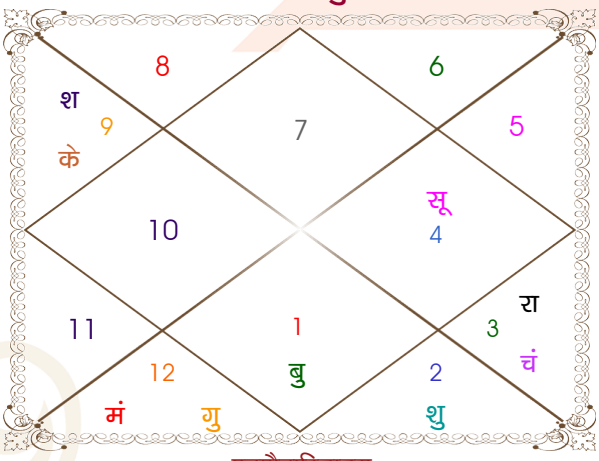

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

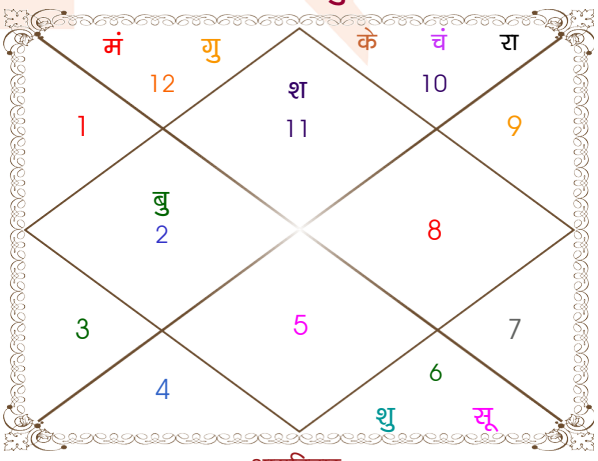

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

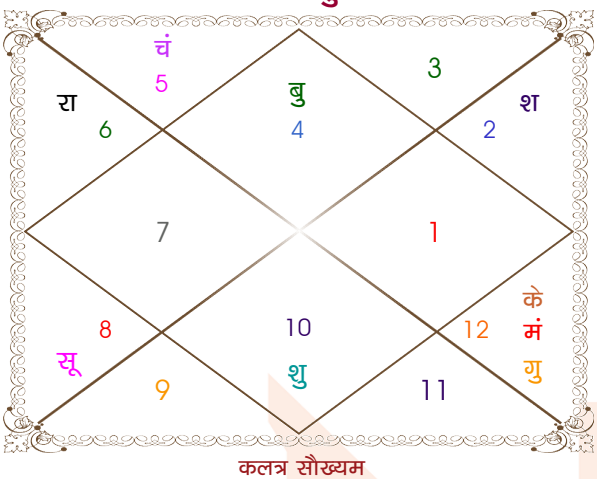

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

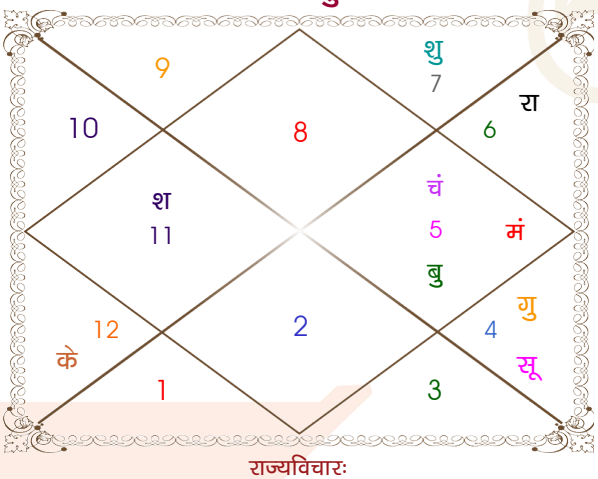

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

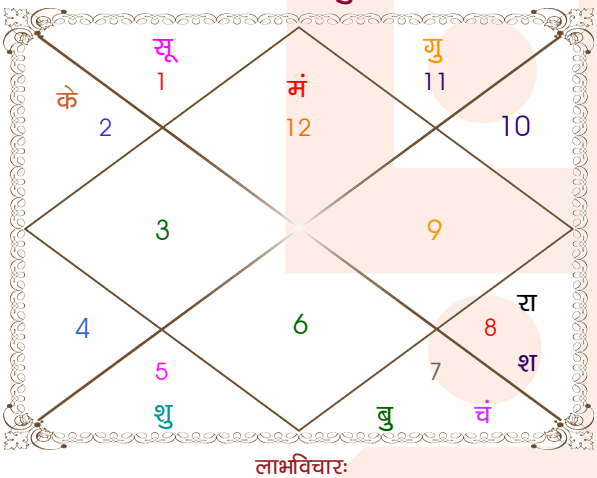

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

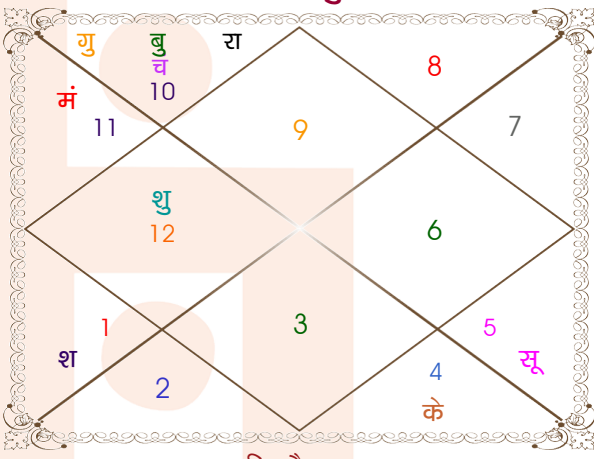

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

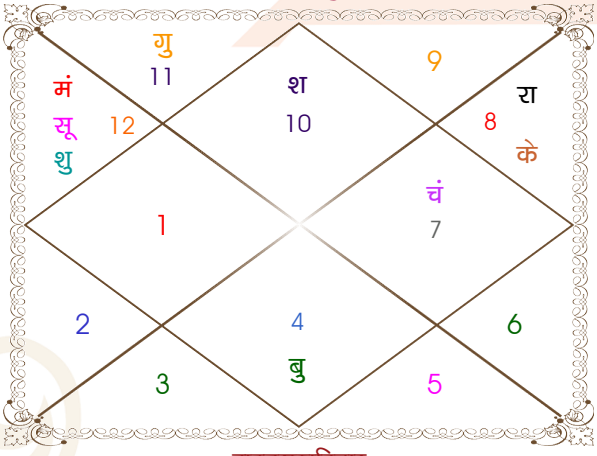

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

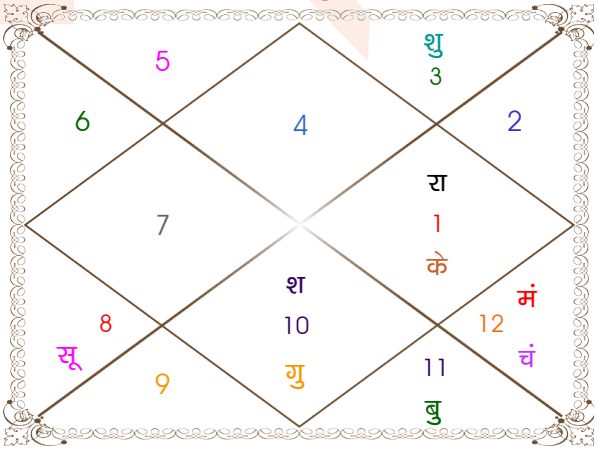

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

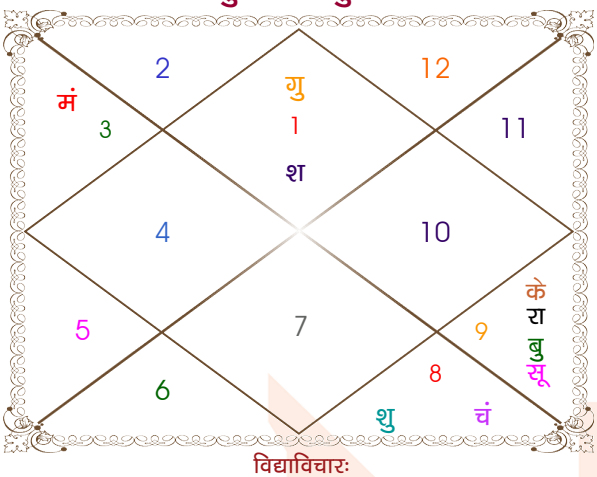

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

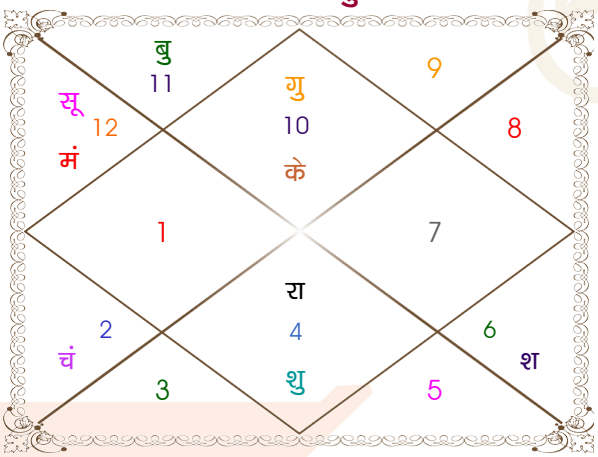

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

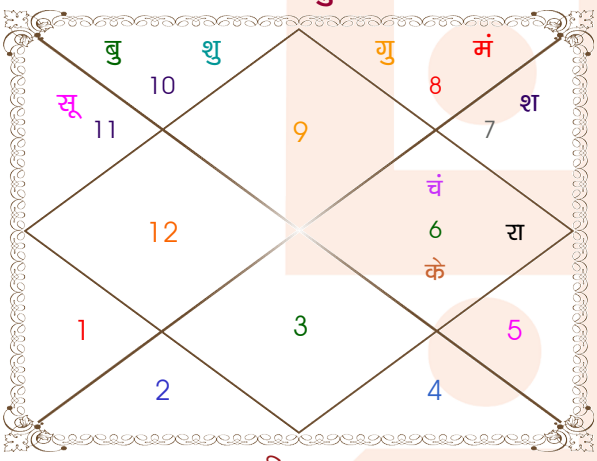

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

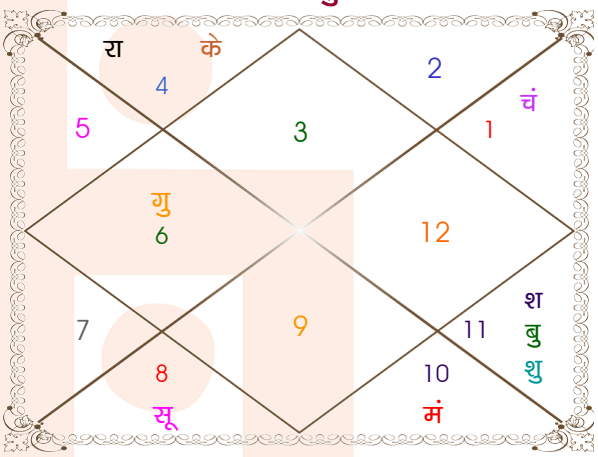

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

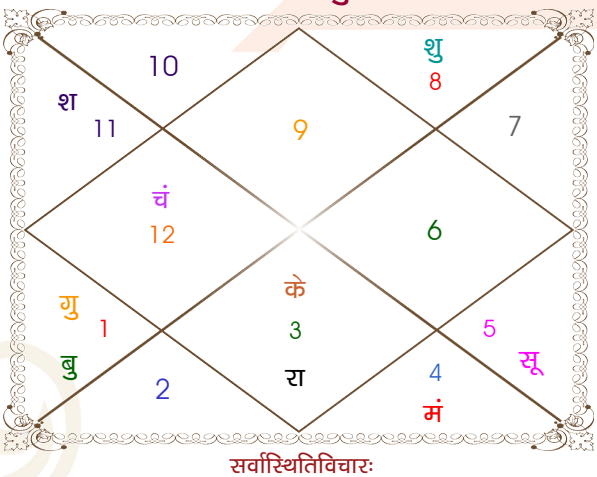

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

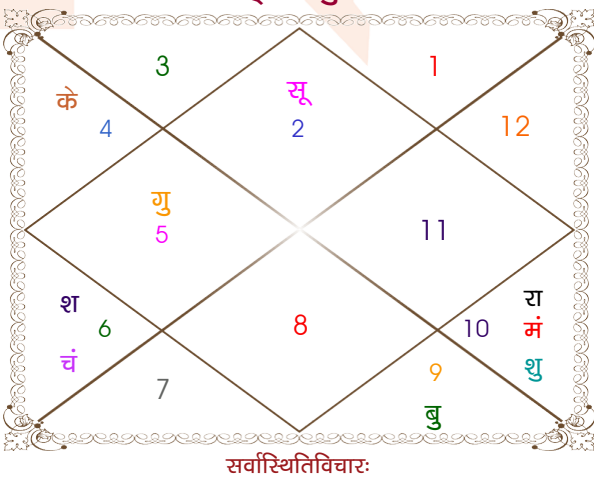

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	मिथु	वृश्चि	मीन	वृष	मीन	कर्क	मिथु	वृश्चि	वृष
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	धनु	मिथु	वृश्चि	वृश्चि	मक	वृश्चि	मीन	कुंभ	वृश्चि	वृष
चतुर्थांश	वृश्चि	मिथु	वृश्चि	धनु	वृश्चि	धनु	मक	मीन	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	तुला	कर्क	मिथु	मीन	मेष	मीन	वृष	धनु	मिथु	धनु
नवमांश	कर्क	वृश्चि	सिंह	मीन	कर्क	मीन	मक	वृष	कन्या	मीन
दशमांश	वृश्चि	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	तुला	कुंभ	कन्या	मीन
द्वादशांश	धनु	सिंह	मक	कुंभ	मक	मक	मीन	मेष	मक	कर्क
षोडशांश	मक	मीन	तुला	मीन	कर्क	कुंभ	मीन	मक	वृश्चि	वृश्चि
विंशांश	कर्क	वृश्चि	मीन	मीन	कुंभ	मक	मिथु	मक	मेष	मेष
चतुर्विंशांश	मेष	धनु	वृश्चि	मिथु	धनु	मेष	वृश्चि	मेष	धनु	धनु
सप्तविंशांश	मक	मीन	वृष	मीन	कुंभ	मक	कर्क	कन्या	कर्क	मक
त्रिंशांश	धनु	कुंभ	कन्या	वृश्चि	मक	वृश्चि	मक	तुला	कन्या	कन्या
खवेदांश	मिथु	वृश्चि	मेष	मक	कुंभ	कन्या	कुंभ	कुंभ	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	धनु	सिंह	मीन	कर्क	मेष	मेष	वृश्चि	कुंभ	मिथु	मिथु
षष्ट्यंश	वृष	वृष	कन्या	मक	धनु	सिंह	मक	कन्या	मक	कर्क

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
गुरु	2 किंसुक	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
शुक्र	2 किंसुक	3 व्यंजन	5 सिंहान	5 कन्दुक
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	7 कल्पवृक्ष
राहु	2 किंसुक	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
केतु	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	16.25	9.20	13.80	13.70	16.80	10.00	16.30	6.10	14.10
सप्तवर्ग	15.55	9.50	13.30	13.80	17.30	11.45	15.83	6.30	13.80
दशवर्ग	13.45	9.63	14.33	14.40	16.35	13.28	16.65	7.23	11.30
षोडशवर्ग	14.80	9.00	12.85	13.25	16.63	12.63	17.30	6.73	12.40

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	41	1	40	22	27	22	22
सप्तवर्गज बल	122	64	120	107	143	92	122
ओजयुग्मक बल	15	15	0	0	0	30	15
केन्द्र बल	30	60	30	60	30	15	30
द्रेष्काण बल	15	0	0	0	0	15	0
कुल स्थान बल	223	139	190	189	200	174	189
कुल दिग्बल	51	59	47	34	15	24	15
नतोन्नत बल	50	10	10	60	50	50	10
पक्ष बल	10	100	10	50	50	50	10
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	15	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	0	0	0	0	45
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	120	56	42	59	40	51	2
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	241	165	62	229	230	166	67
कुल चेष्टाबल	0	0	30	41	25	39	6
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	12	7	-7	13	-7	3	10
कुल षट्बल	587	421	337	532	497	449	295
रूप षट्बल	9.8	7.0	5.6	8.9	8.3	7.5	4.9
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	2.0	1.2	1.1	1.3	1.3	1.4	1.0
संबंधित पद	1	5	6	4	3	2	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	49.75	5.81	34.19	30.31	25.84	29.26	11.88
कष्ट फल	2.19	24.63	24.95	26.51	34.10	28.29	45.15

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	587	532	449	337	497	295	295	497	337	449	532	421
भावदिग्बल	30	50	40	30	20	20	0	20	50	60	40	20
भावदृष्टि बल	72	30	44	63	81	32	27	12	-6	21	32	40
कुल भाव बल	688	612	534	430	598	347	322	529	381	530	604	482
रूप भाव बल	11.5	10.2	8.9	7.2	10.0	5.8	5.4	8.8	6.4	8.8	10.1	8.0
संबंधित पद	1	2	5	9	4	11	12	7	10	6	3	8

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	सिंह	10:44:35	--	--	मघा	4	10
गुलिक	गु	मिथु	28:13:03	--	--	पुनर्वसु	3	7
काल	का	कर्क	20:36:32	--	--	आश्लेषा	2	9
मृत्यु	मृ	कन्या	05:50:06	--	--	उ०फाल्गुनी	3	12
यमघंटक	यम	तुला	21:31:22	--	--	विशाखा	1	16
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	28:58:50	--	--	चित्रा	2	14
धूम	धू	तुला	19:02:32	--	--	स्वाति	4	15
व्यतिपात	व्य	कन्या	10:57:28	--	--	हस्त	1	13
परिवेश	परि	मीन	10:57:28	--	--	उ०भाद्रपद	3	26
इन्द्रचाप	इ	मेष	19:02:32	--	--	भरणी	2	2
उपकेतु	उप	वृष	05:42:32	--	--	कृतिका	3	3

प्राणपद	:	मक	17:50:53	कारकाँश लग्न	:	मीन	23:55:37
भाव लग्न	:	सिंह	22:48:57	होरा लग्न	:	वृश्चि	09:55:22
घटी लग्न	:	कर्क	01:14:37	वर्णद लग्न	:	मेष	09:20:04

उपग्रह कुंडली

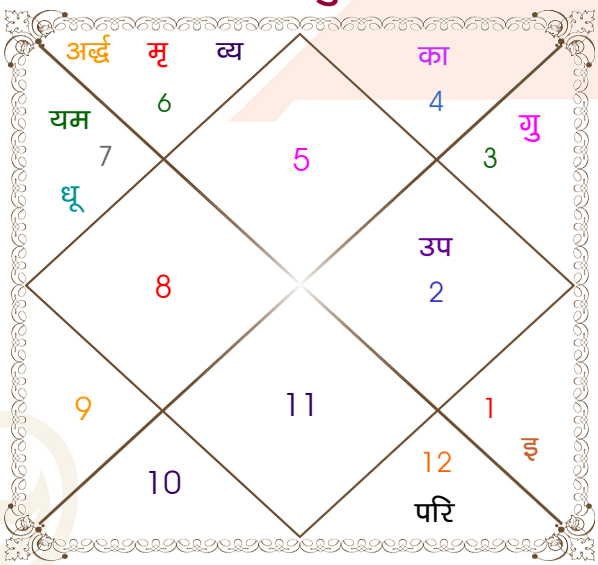

आरूढ़ कुंडली

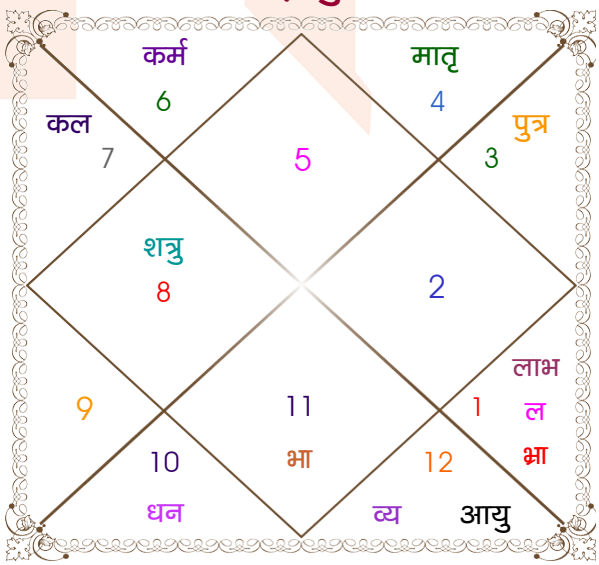

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	5	5	2	5	3	3	4	8	3	4	5	1	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
कुल	5	4	6	1	4	6	5	2	3	5	4	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
कुल	4	4	2	4	1	3	4	4	1	4	5	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरु	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
कुल	4	4	3	4	6	5	4	3	5	6	5	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	9
शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	6
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
कुल	6	5	6	5	2	5	6	4	3	6	5	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	5
मंगल	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	4	4	5	6	5	3	6	4	5	4	3	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	3	3	4	2	3	2	4	6	3	2	4	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
सूर्य	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	7	5	4	4	3	4	2	6	4	4	4	2	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	3	3	3	4	2	3	2	4	6	3	2	39
गुरु	5	6	5	2	5	6	4	3	6	5	3	6	56
मंगल	4	2	4	1	3	4	4	1	4	5	3	4	39
सूर्य	5	1	5	5	2	5	3	3	4	8	3	4	48
शुक्र	4	3	3	4	4	5	6	5	3	6	4	5	52
बुध	5	4	4	3	4	6	5	4	3	5	6	5	54
चंद्र	6	5	2	3	5	4	4	5	4	6	1	4	49
बिन्दु	33	24	26	21	27	32	29	23	28	41	23	30	337
रेखा	23	32	30	35	29	24	27	33	28	15	33	26	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	1	0	0	0	0	0	4	0	0	6
गुरु	0	1	2	0	0	1	1	1	1	0	0	4	11
मंगल	1	0	1	0	0	2	1	0	1	3	0	3	12
सूर्य	3	0	2	2	0	4	0	0	2	7	0	1	21
शुक्र	1	0	0	0	1	2	3	1	0	3	1	1	13
बुध	2	0	0	0	1	2	1	1	0	1	2	2	12
चंद्र	2	1	1	0	1	0	3	2	0	2	0	1	13
रेखा	9	3	6	3	3	11	9	5	4	20	3	12	88

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	1	0	0	0	0	0	4	0	0	6
गुरु	0	1	2	0	0	0	0	1	0	0	0	4	8
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	0	3	0	3	10
सूर्य	3	0	2	2	0	2	0	0	1	7	0	1	18
शुक्र	0	0	0	0	1	2	3	1	0	2	1	1	11
बुध	1	0	0	0	1	2	1	1	0	1	1	2	10
चंद्र	0	1	1	0	1	0	2	2	0	2	0	1	10
रेखा	5	3	6	3	3	7	7	5	1	19	2	12	73

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	111	80	78	82	82	82	34
ग्रह पिंड	52	43	64	41	102	23	12
शोध्य पिंड	163	123	142	123	184	105	46

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

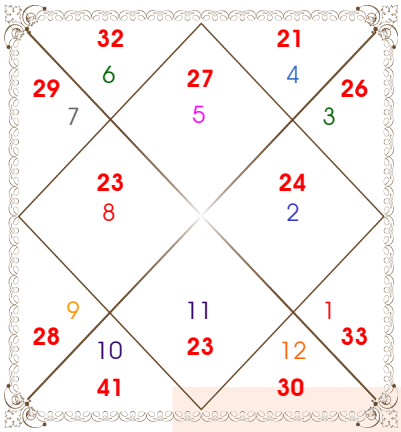

सूर्य का अष्टकवर्ग

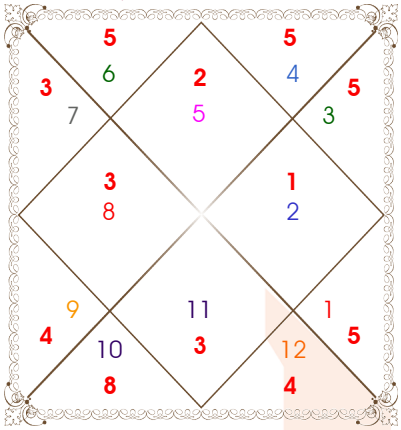

चंद्र का अष्टकवर्ग

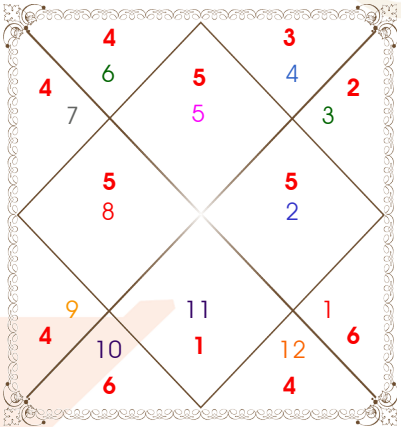

मंगल का अष्टकवर्ग

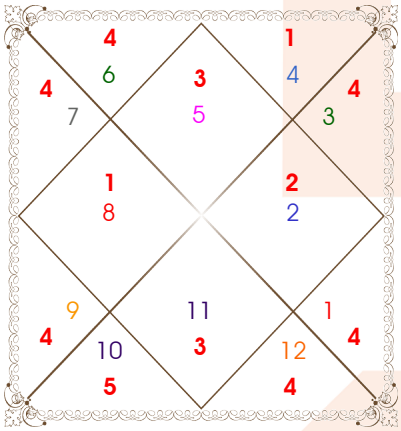

बुध का अष्टकवर्ग

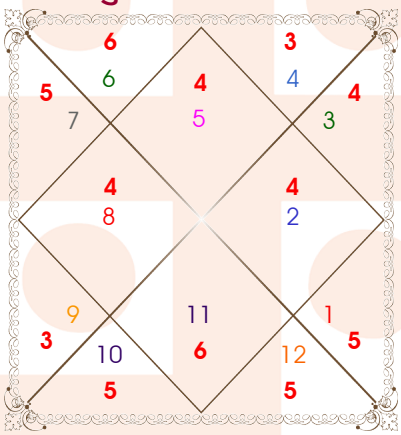

गुरू का अष्टकवर्ग

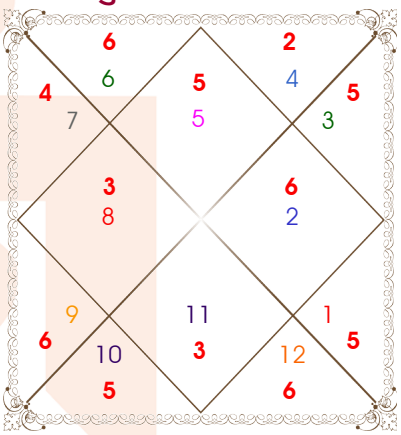

शुक्र का अष्टकवर्ग

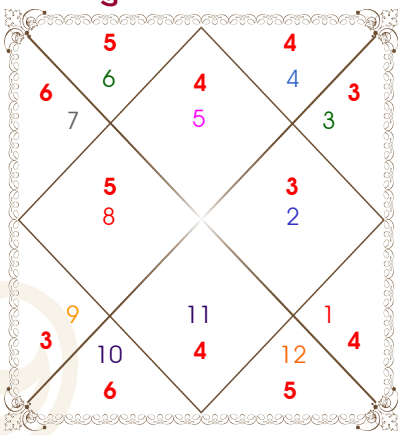

शनि का अष्टकवर्ग

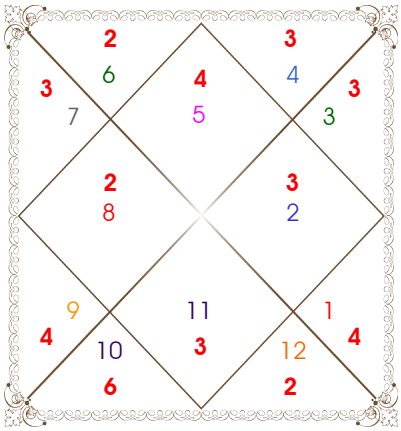

लग्न का अष्टकवर्ग

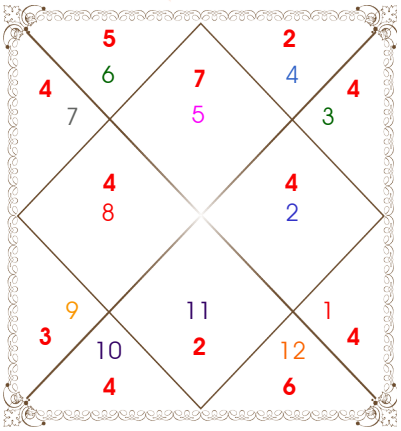

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 16 वर्ष 6 मास 27 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
21/06/1975		17/01/1992		17/01/2009		17/01/2016		17/01/2036	
17/01/1992		17/01/2009		17/01/2016		17/01/2036		17/01/2042	
शनि	20/01/1976	बुध	15/06/1994	केतु	15/06/2009	शुक्र	19/05/2019	सूर्य	06/05/2036
बुध	30/09/1978	केतु	12/06/1995	शुक्र	15/08/2010	सूर्य	18/05/2020	चंद्र	05/11/2036
केतु	08/11/1979	शुक्र	12/04/1998	सूर्य	21/12/2010	चंद्र	17/01/2022	मंगल	12/03/2037
शुक्र	08/01/1983	सूर्य	17/02/1999	चंद्र	22/07/2011	मंगल	19/03/2023	राहु	04/02/2038
सूर्य	21/12/1983	चंद्र	18/07/2000	मंगल	18/12/2011	राहु	19/03/2026	गुरु	23/11/2038
चंद्र	21/07/1985	मंगल	15/07/2001	राहु	04/01/2013	गुरु	17/11/2028	शनि	05/11/2039
मंगल	30/08/1986	राहु	02/02/2004	गुरु	11/12/2013	शनि	17/01/2032	बुध	11/09/2040
राहु	06/07/1989	गुरु	09/05/2006	शनि	20/01/2015	बुध	17/11/2034	केतु	17/01/2041
गुरु	17/01/1992	शनि	17/01/2009	बुध	17/01/2016	केतु	17/01/2036	शुक्र	17/01/2042

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
17/01/2042		17/01/2052		17/01/2059		17/01/2077		17/01/2093	
17/01/2052		17/01/2059		17/01/2077		17/01/2093		00/00/0000	
चंद्र	17/11/2042	मंगल	14/06/2052	राहु	29/09/2061	गुरु	07/03/2079	शनि	21/06/2095
मंगल	18/06/2043	राहु	03/07/2053	गुरु	23/02/2064	शनि	17/09/2081		00/00/0000
राहु	17/12/2044	गुरु	09/06/2054	शनि	30/12/2066	बुध	24/12/2083		00/00/0000
गुरु	18/04/2046	शनि	19/07/2055	बुध	18/07/2069	केतु	29/11/2084		00/00/0000
शनि	17/11/2047	बुध	15/07/2056	केतु	06/08/2070	शुक्र	31/07/2087		00/00/0000
बुध	18/04/2049	केतु	11/12/2056	शुक्र	05/08/2073	सूर्य	18/05/2088		00/00/0000
केतु	17/11/2049	शुक्र	10/02/2058	सूर्य	30/06/2074	चंद्र	17/09/2089		00/00/0000
शुक्र	19/07/2051	सूर्य	18/06/2058	चंद्र	30/12/2075	मंगल	24/08/2090		00/00/0000
सूर्य	17/01/2052	चंद्र	17/01/2059	मंगल	17/01/2077	राहु	17/01/2093		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 16 वर्ष 7 मा 3 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
21/06/1975		20/01/1976		30/09/1978		08/11/1979		08/01/1983	
20/01/1976		30/09/1978		08/11/1979		08/01/1983		21/12/1983	
	00/00/0000	बुध	08/06/1976	केतु	23/10/1978	शुक्र	19/05/1980	सूर्य	25/01/1983
	00/00/0000	केतु	04/08/1976	शुक्र	30/12/1978	सूर्य	16/07/1980	चंद्र	23/02/1983
	00/00/0000	शुक्र	15/01/1977	सूर्य	19/01/1979	चंद्र	20/10/1980	मंगल	15/03/1983
	00/00/0000	सूर्य	05/03/1977	चंद्र	22/02/1979	मंगल	27/12/1980	राहु	07/05/1983
	00/00/0000	चंद्र	26/05/1977	मंगल	17/03/1979	राहु	18/06/1981	गुरु	22/06/1983
	00/00/0000	मंगल	22/07/1977	राहु	17/05/1979	गुरु	19/11/1981	शनि	16/08/1983
	21/06/1975	राहु	17/12/1977	गुरु	10/07/1979	शनि	22/05/1982	बुध	04/10/1983
राहु	27/08/1975	गुरु	27/04/1978	शनि	12/09/1979	बुध	01/11/1982	केतु	24/10/1983
गुरु	20/01/1976	शनि	30/09/1978	बुध	08/11/1979	केतु	08/01/1983	शुक्र	21/12/1983

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
21/12/1983		21/07/1985		30/08/1986		06/07/1989		17/01/1992	
21/07/1985		30/08/1986		06/07/1989		17/01/1992		15/06/1994	
चंद्र	07/02/1984	मंगल	14/08/1985	राहु	02/02/1987	गुरु	06/11/1989	बुध	21/05/1992
मंगल	12/03/1984	राहु	14/10/1985	गुरु	21/06/1987	शनि	02/04/1990	केतु	11/07/1992
राहु	07/06/1984	गुरु	07/12/1985	शनि	03/12/1987	बुध	11/08/1990	शुक्र	05/12/1992
गुरु	23/08/1984	शनि	09/02/1986	बुध	28/04/1988	केतु	04/10/1990	सूर्य	18/01/1993
शनि	22/11/1984	बुध	07/04/1986	केतु	28/06/1988	शुक्र	07/03/1991	चंद्र	01/04/1993
बुध	12/02/1985	केतु	01/05/1986	शुक्र	19/12/1988	सूर्य	22/04/1991	मंगल	22/05/1993
केतु	18/03/1985	शुक्र	07/07/1986	सूर्य	09/02/1989	चंद्र	09/07/1991	राहु	01/10/1993
शुक्र	22/06/1985	सूर्य	27/07/1986	चंद्र	06/05/1989	मंगल	01/09/1991	गुरु	27/01/1994
सूर्य	21/07/1985	चंद्र	30/08/1986	मंगल	06/07/1989	राहु	17/01/1992	शनि	15/06/1994

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
15/06/1994		12/06/1995		12/04/1998		17/02/1999		18/07/2000	
12/06/1995		12/04/1998		17/02/1999		18/07/2000		15/07/2001	
केतु	06/07/1994	शुक्र	02/12/1995	सूर्य	28/04/1998	चंद्र	01/04/1999	मंगल	08/08/2000
शुक्र	04/09/1994	सूर्य	22/01/1996	चंद्र	23/05/1998	मंगल	01/05/1999	राहु	01/10/2000
सूर्य	23/09/1994	चंद्र	18/04/1996	मंगल	11/06/1998	राहु	17/07/1999	गुरु	19/11/2000
चंद्र	23/10/1994	मंगल	17/06/1996	राहु	27/07/1998	गुरु	24/09/1999	शनि	15/01/2001
मंगल	13/11/1994	राहु	19/11/1996	गुरु	07/09/1998	शनि	15/12/1999	बुध	07/03/2001
राहु	06/01/1995	गुरु	06/04/1997	शनि	26/10/1998	बुध	27/02/2000	केतु	28/03/2001
गुरु	24/02/1995	शनि	17/09/1997	बुध	09/12/1998	केतु	28/03/2000	शुक्र	28/05/2001
शनि	22/04/1995	बुध	11/02/1998	केतु	27/12/1998	शुक्र	22/06/2000	सूर्य	15/06/2001
बुध	12/06/1995	केतु	12/04/1998	शुक्र	17/02/1999	सूर्य	18/07/2000	चंद्र	15/07/2001

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
15/07/2001		02/02/2004		09/05/2006		17/01/2009		15/06/2009	
02/02/2004		09/05/2006		17/01/2009		15/06/2009		15/08/2010	
राहु	02/12/2001	गुरु	22/05/2004	शनि	12/10/2006	केतु	25/01/2009	शुक्र	25/08/2009
गुरु	05/04/2002	शनि	30/09/2004	बुध	28/02/2007	शुक्र	19/02/2009	सूर्य	15/09/2009
शनि	31/08/2002	बुध	25/01/2005	केतु	27/04/2007	सूर्य	27/02/2009	चंद्र	21/10/2009
बुध	09/01/2003	केतु	15/03/2005	शुक्र	08/10/2007	चंद्र	11/03/2009	मंगल	14/11/2009
केतु	05/03/2003	शुक्र	31/07/2005	सूर्य	26/11/2007	मंगल	20/03/2009	राहु	17/01/2010
शुक्र	07/08/2003	सूर्य	10/09/2005	चंद्र	16/02/2008	राहु	11/04/2009	गुरु	15/03/2010
सूर्य	23/09/2003	चंद्र	18/11/2005	मंगल	13/04/2008	गुरु	01/05/2009	शनि	22/05/2010
चंद्र	09/12/2003	मंगल	05/01/2006	राहु	07/09/2008	शनि	25/05/2009	बुध	21/07/2010
मंगल	02/02/2004	राहु	09/05/2006	गुरु	17/01/2009	बुध	15/06/2009	केतु	15/08/2010

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
15/08/2010		21/12/2010		22/07/2011		18/12/2011		04/01/2013	
21/12/2010		22/07/2011		18/12/2011		04/01/2013		11/12/2013	
सूर्य	21/08/2010	चंद्र	07/01/2011	मंगल	30/07/2011	राहु	13/02/2012	गुरु	19/02/2013
चंद्र	01/09/2010	मंगल	20/01/2011	राहु	22/08/2011	गुरु	05/04/2012	शनि	14/04/2013
मंगल	08/09/2010	राहु	21/02/2011	गुरु	11/09/2011	शनि	04/06/2012	बुध	01/06/2013
राहु	28/09/2010	गुरु	21/03/2011	शनि	04/10/2011	बुध	29/07/2012	केतु	21/06/2013
गुरु	15/10/2010	शनि	24/04/2011	बुध	25/10/2011	केतु	20/08/2012	शुक्र	17/08/2013
शनि	04/11/2010	बुध	24/05/2011	केतु	03/11/2011	शुक्र	23/10/2012	सूर्य	03/09/2013
बुध	22/11/2010	केतु	06/06/2011	शुक्र	28/11/2011	सूर्य	11/11/2012	चंद्र	01/10/2013
केतु	29/11/2010	शुक्र	11/07/2011	सूर्य	05/12/2011	चंद्र	13/12/2012	मंगल	21/10/2013
शुक्र	21/12/2010	सूर्य	22/07/2011	चंद्र	18/12/2011	मंगल	04/01/2013	राहु	11/12/2013

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
11/12/2013		20/01/2015		17/01/2016		19/05/2019		18/05/2020	
20/01/2015		17/01/2016		19/05/2019		18/05/2020		17/01/2022	
शनि	13/02/2014	बुध	12/03/2015	शुक्र	07/08/2016	सूर्य	06/06/2019	चंद्र	08/07/2020
बुध	12/04/2014	केतु	03/04/2015	सूर्य	07/10/2016	चंद्र	07/07/2019	मंगल	12/08/2020
केतु	05/05/2014	शुक्र	02/06/2015	चंद्र	17/01/2017	मंगल	28/07/2019	राहु	12/11/2020
शुक्र	12/07/2014	सूर्य	20/06/2015	मंगल	29/03/2017	राहु	21/09/2019	गुरु	01/02/2021
सूर्य	01/08/2014	चंद्र	20/07/2015	राहु	27/09/2017	गुरु	08/11/2019	शनि	08/05/2021
चंद्र	04/09/2014	मंगल	10/08/2015	गुरु	09/03/2018	शनि	05/01/2020	बुध	02/08/2021
मंगल	27/09/2014	राहु	04/10/2015	शनि	17/09/2018	बुध	26/02/2020	केतु	07/09/2021
राहु	27/11/2014	गुरु	21/11/2015	बुध	09/03/2019	केतु	18/03/2020	शुक्र	17/12/2021
गुरु	20/01/2015	शनि	17/01/2016	केतु	19/05/2019	शुक्र	18/05/2020	सूर्य	17/01/2022

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
17/01/2022		19/03/2023		19/03/2026		17/11/2028		17/01/2032	
19/03/2023		19/03/2026		17/11/2028		17/01/2032		17/11/2034	
मंगल	11/02/2022	राहु	30/08/2023	गुरु	27/07/2026	शनि	19/05/2029	बुध	12/06/2032
राहु	16/04/2022	गुरु	23/01/2024	शनि	28/12/2026	बुध	30/10/2029	केतु	11/08/2032
गुरु	11/06/2022	शनि	15/07/2024	बुध	15/05/2027	केतु	05/01/2030	शुक्र	31/01/2033
शनि	18/08/2022	बुध	17/12/2024	केतु	11/07/2027	शुक्र	17/07/2030	सूर्य	24/03/2033
बुध	17/10/2022	केतु	19/02/2025	शुक्र	20/12/2027	सूर्य	13/09/2030	चंद्र	18/06/2033
केतु	11/11/2022	शुक्र	21/08/2025	सूर्य	07/02/2028	चंद्र	18/12/2030	मंगल	17/08/2033
शुक्र	21/01/2023	सूर्य	14/10/2025	चंद्र	28/04/2028	मंगल	24/02/2031	राहु	19/01/2034
सूर्य	11/02/2023	चंद्र	14/01/2026	मंगल	24/06/2028	राहु	16/08/2031	गुरु	06/06/2034
चंद्र	19/03/2023	मंगल	19/03/2026	राहु	17/11/2028	गुरु	17/01/2032	शनि	17/11/2034

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
17/11/2034		17/01/2036		06/05/2036		05/11/2036		12/03/2037	
17/01/2036		06/05/2036		05/11/2036		12/03/2037		04/02/2038	
केतु	12/12/2034	सूर्य	23/01/2036	चंद्र	21/05/2036	मंगल	12/11/2036	राहु	01/05/2037
शुक्र	21/02/2035	चंद्र	01/02/2036	मंगल	01/06/2036	राहु	01/12/2036	गुरु	14/06/2037
सूर्य	14/03/2035	मंगल	07/02/2036	राहु	28/06/2036	गुरु	18/12/2036	शनि	05/08/2037
चंद्र	19/04/2035	राहु	24/02/2036	गुरु	23/07/2036	शनि	07/01/2037	बुध	20/09/2037
मंगल	14/05/2035	गुरु	09/03/2036	शनि	20/08/2036	बुध	26/01/2037	केतु	09/10/2037
राहु	17/07/2035	शनि	27/03/2036	बुध	15/09/2036	केतु	02/02/2037	शुक्र	03/12/2037
गुरु	11/09/2035	बुध	11/04/2036	केतु	26/09/2036	शुक्र	23/02/2037	सूर्य	20/12/2037
शनि	18/11/2035	केतु	18/04/2036	शुक्र	26/10/2036	सूर्य	02/03/2037	चंद्र	16/01/2038
बुध	17/01/2036	शुक्र	06/05/2036	सूर्य	05/11/2036	चंद्र	12/03/2037	मंगल	04/02/2038

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
04/02/2038		23/11/2038		05/11/2039		11/09/2040		17/01/2041	
23/11/2038		05/11/2039		11/09/2040		17/01/2041		17/01/2042	
गुरु	15/03/2038	शनि	17/01/2039	बुध	19/12/2039	केतु	18/09/2040	शुक्र	18/03/2041
शनि	30/04/2038	बुध	07/03/2039	केतु	06/01/2040	शुक्र	10/10/2040	सूर्य	06/04/2041
बुध	11/06/2038	केतु	28/03/2039	शुक्र	27/02/2040	सूर्य	16/10/2040	चंद्र	06/05/2041
केतु	28/06/2038	शुक्र	24/05/2039	सूर्य	14/03/2040	चंद्र	27/10/2040	मंगल	27/05/2041
शुक्र	15/08/2038	सूर्य	11/06/2039	चंद्र	09/04/2040	मंगल	03/11/2040	राहु	21/07/2041
सूर्य	30/08/2038	चंद्र	10/07/2039	मंगल	27/04/2040	राहु	22/11/2040	गुरु	08/09/2041
चंद्र	23/09/2038	मंगल	30/07/2039	राहु	12/06/2040	गुरु	09/12/2040	शनि	05/11/2041
मंगल	10/10/2038	राहु	20/09/2039	गुरु	24/07/2040	शनि	29/12/2040	बुध	27/12/2041
राहु	23/11/2038	गुरु	05/11/2039	शनि	11/09/2040	बुध	17/01/2041	केतु	17/01/2042

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
17/01/2042		17/11/2042		18/06/2043		17/12/2044		18/04/2046	
17/11/2042		18/06/2043		17/12/2044		18/04/2046		17/11/2047	
चंद्र	11/02/2042	मंगल	30/11/2042	राहु	08/09/2043	गुरु	20/02/2045	शनि	19/07/2046
मंगल	01/03/2042	राहु	01/01/2043	गुरु	20/11/2043	शनि	08/05/2045	बुध	09/10/2046
राहु	16/04/2042	गुरु	29/01/2043	शनि	15/02/2044	बुध	16/07/2045	केतु	11/11/2046
गुरु	26/05/2042	शनि	04/03/2043	बुध	03/05/2044	केतु	14/08/2045	शुक्र	16/02/2047
शनि	13/07/2042	बुध	03/04/2043	केतु	04/06/2044	शुक्र	03/11/2045	सूर्य	17/03/2047
बुध	26/08/2042	केतु	15/04/2043	शुक्र	03/09/2044	सूर्य	27/11/2045	चंद्र	04/05/2047
केतु	12/09/2042	शुक्र	21/05/2043	सूर्य	01/10/2044	चंद्र	07/01/2046	मंगल	07/06/2047
शुक्र	02/11/2042	सूर्य	01/06/2043	चंद्र	15/11/2044	मंगल	04/02/2046	राहु	01/09/2047
सूर्य	17/11/2042	चंद्र	18/06/2043	मंगल	17/12/2044	राहु	18/04/2046	गुरु	17/11/2047

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
17/11/2047		18/04/2049		17/11/2049		19/07/2051		17/01/2052	
18/04/2049		17/11/2049		19/07/2051		17/01/2052		14/06/2052	
बुध	30/01/2048	केतु	30/04/2049	शुक्र	26/02/2050	सूर्य	28/07/2051	मंगल	26/01/2052
केतु	29/02/2048	शुक्र	05/06/2049	सूर्य	29/03/2050	चंद्र	12/08/2051	राहु	17/02/2052
शुक्र	25/05/2048	सूर्य	15/06/2049	चंद्र	19/05/2050	मंगल	23/08/2051	गुरु	08/03/2052
सूर्य	20/06/2048	चंद्र	03/07/2049	मंगल	23/06/2050	राहु	19/09/2051	शनि	01/04/2052
चंद्र	02/08/2048	मंगल	16/07/2049	राहु	22/09/2050	गुरु	13/10/2051	बुध	22/04/2052
मंगल	01/09/2048	राहु	17/08/2049	गुरु	13/12/2050	शनि	11/11/2051	केतु	01/05/2052
राहु	18/11/2048	गुरु	14/09/2049	शनि	19/03/2051	बुध	07/12/2051	शुक्र	26/05/2052
गुरु	26/01/2049	शनि	18/10/2049	बुध	13/06/2051	केतु	18/12/2051	सूर्य	02/06/2052
शनि	18/04/2049	बुध	17/11/2049	केतु	19/07/2051	शुक्र	17/01/2052	चंद्र	14/06/2052

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
14/06/2052		03/07/2053		09/06/2054		19/07/2055		15/07/2056	
03/07/2053		09/06/2054		19/07/2055		15/07/2056		11/12/2056	
राहु	11/08/2052	गुरु	17/08/2053	शनि	12/08/2054	बुध	08/09/2055	केतु	24/07/2056
गुरु	01/10/2052	शनि	10/10/2053	बुध	08/10/2054	केतु	29/09/2055	शुक्र	17/08/2056
शनि	01/12/2052	बुध	28/11/2053	केतु	01/11/2054	शुक्र	29/11/2055	सूर्य	25/08/2056
बुध	24/01/2053	केतु	18/12/2053	शुक्र	07/01/2055	सूर्य	17/12/2055	चंद्र	06/09/2056
केतु	16/02/2053	शुक्र	12/02/2054	सूर्य	28/01/2055	चंद्र	16/01/2056	मंगल	15/09/2056
शुक्र	20/04/2053	सूर्य	01/03/2054	चंद्र	02/03/2055	मंगल	06/02/2056	राहु	07/10/2056
सूर्य	10/05/2053	चंद्र	30/03/2054	मंगल	26/03/2055	राहु	31/03/2056	गुरु	27/10/2056
चंद्र	11/06/2053	मंगल	19/04/2054	राहु	26/05/2055	गुरु	19/05/2056	शनि	20/11/2056
मंगल	03/07/2053	राहु	09/06/2054	गुरु	19/07/2055	शनि	15/07/2056	बुध	11/12/2056

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
11/12/2056		10/02/2058		18/06/2058		17/01/2059		29/09/2061	
10/02/2058		18/06/2058		17/01/2059		29/09/2061		23/02/2064	
शुक्र	20/02/2057	सूर्य	17/02/2058	चंद्र	06/07/2058	राहु	14/06/2059	गुरु	24/01/2062
सूर्य	13/03/2057	चंद्र	27/02/2058	मंगल	18/07/2058	गुरु	23/10/2059	शनि	12/06/2062
चंद्र	18/04/2057	मंगल	07/03/2058	राहु	19/08/2058	शनि	28/03/2060	बुध	14/10/2062
मंगल	13/05/2057	राहु	26/03/2058	गुरु	17/09/2058	बुध	14/08/2060	केतु	04/12/2062
राहु	16/07/2057	गुरु	12/04/2058	शनि	20/10/2058	केतु	11/10/2060	शुक्र	29/04/2063
गुरु	10/09/2057	शनि	02/05/2058	बुध	19/11/2058	शुक्र	24/03/2061	सूर्य	12/06/2063
शनि	17/11/2057	बुध	20/05/2058	केतु	02/12/2058	सूर्य	13/05/2061	चंद्र	24/08/2063
बुध	16/01/2058	केतु	28/05/2058	शुक्र	06/01/2059	चंद्र	03/08/2061	मंगल	14/10/2063
केतु	10/02/2058	शुक्र	18/06/2058	सूर्य	17/01/2059	मंगल	29/09/2061	राहु	23/02/2064

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
23/02/2064		30/12/2066		18/07/2069		06/08/2070		05/08/2073	
30/12/2066		18/07/2069		06/08/2070		05/08/2073		30/06/2074	
शनि	06/08/2064	बुध	11/05/2067	केतु	10/08/2069	शुक्र	04/02/2071	सूर्य	22/08/2073
बुध	31/12/2064	केतु	04/07/2067	शुक्र	12/10/2069	सूर्य	31/03/2071	चंद्र	18/09/2073
केतु	02/03/2065	शुक्र	06/12/2067	सूर्य	01/11/2069	चंद्र	30/06/2071	मंगल	07/10/2073
शुक्र	22/08/2065	सूर्य	22/01/2068	चंद्र	03/12/2069	मंगल	02/09/2071	राहु	26/11/2073
सूर्य	13/10/2065	चंद्र	09/04/2068	मंगल	25/12/2069	राहु	14/02/2072	गुरु	09/01/2074
चंद्र	08/01/2066	मंगल	02/06/2068	राहु	21/02/2070	गुरु	09/07/2072	शनि	02/03/2074
मंगल	10/03/2066	राहु	20/10/2068	गुरु	13/04/2070	शनि	29/12/2072	बुध	17/04/2074
राहु	13/08/2066	गुरु	21/02/2069	शनि	12/06/2070	बुध	03/06/2073	केतु	06/05/2074
गुरु	30/12/2066	शनि	18/07/2069	बुध	06/08/2070	केतु	05/08/2073	शुक्र	30/06/2074

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
30/06/2074		30/12/2075		17/01/2077		07/03/2079		17/09/2081	
30/12/2075		17/01/2077		07/03/2079		17/09/2081		24/12/2083	
चंद्र	15/08/2074	मंगल	21/01/2076	गुरु	30/04/2077	शनि	31/07/2079	बुध	12/01/2082
मंगल	16/09/2074	राहु	19/03/2076	शनि	01/09/2077	बुध	09/12/2079	केतु	02/03/2082
राहु	07/12/2074	गुरु	09/05/2076	बुध	20/12/2077	केतु	01/02/2080	शुक्र	18/07/2082
गुरु	18/02/2075	शनि	09/07/2076	केतु	04/02/2078	शुक्र	05/07/2080	सूर्य	28/08/2082
शनि	16/05/2075	बुध	01/09/2076	शुक्र	14/06/2078	सूर्य	20/08/2080	चंद्र	05/11/2082
बुध	01/08/2075	केतु	24/09/2076	सूर्य	23/07/2078	चंद्र	05/11/2080	मंगल	23/12/2082
केतु	02/09/2075	शुक्र	26/11/2076	चंद्र	25/09/2078	मंगल	29/12/2080	राहु	27/04/2083
शुक्र	03/12/2075	सूर्य	16/12/2076	मंगल	10/11/2078	राहु	17/05/2081	गुरु	15/08/2083
सूर्य	30/12/2075	चंद्र	17/01/2077	राहु	07/03/2079	गुरु	17/09/2081	शनि	24/12/2083

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - राहु - सूर्य	
21/08/2025 04:27	
14/10/2025 23:21	
सूर्य	23/08/2025 22:12
चंद्र	28/08/2025 11:47
मंगल	31/08/2025 16:29
राहु	08/09/2025 21:43
गुरु	16/09/2025 05:02
शनि	24/09/2025 21:14
बुध	02/10/2025 15:30
केतु	05/10/2025 20:12
शुक्र	14/10/2025 23:21

शुक्र - राहु - चंद्र	
14/10/2025 23:21	
14/01/2026 06:51	
चंद्र	22/10/2025 13:59
मंगल	27/10/2025 21:49
राहु	10/11/2025 14:33
गुरु	22/11/2025 18:45
शनि	07/12/2025 05:44
बुध	20/12/2025 04:12
केतु	25/12/2025 12:02
शुक्र	09/01/2026 17:17
सूर्य	14/01/2026 06:51

शुक्र - राहु - मंगल	
14/01/2026 06:51	
19/03/2026 04:54	
मंगल	18/01/2026 00:20
राहु	27/01/2026 14:27
गुरु	05/02/2026 02:59
शनि	15/02/2026 05:53
बुध	24/02/2026 07:12
केतु	28/02/2026 00:41
शुक्र	10/03/2026 16:22
सूर्य	13/03/2026 21:04
चंद्र	19/03/2026 04:54

शुक्र - गुरु - गुरु	
19/03/2026 04:54	
27/07/2026 01:42	
गुरु	05/04/2026 12:29
शनि	26/04/2026 01:58
बुध	14/05/2026 11:31
केतु	22/05/2026 01:20
शुक्र	12/06/2026 16:48
सूर्य	19/06/2026 04:38
चंद्र	30/06/2026 00:22
मंगल	07/07/2026 14:11
राहु	27/07/2026 01:42

शुक्र - गुरु - शनि	
27/07/2026 01:42	
28/12/2026 06:54	
शनि	20/08/2026 11:44
बुध	11/09/2026 08:04
केतु	20/09/2026 07:58
शुक्र	16/10/2026 00:50
सूर्य	23/10/2026 17:54
चंद्र	05/11/2026 14:20
मंगल	14/11/2026 14:14
राहु	07/12/2026 17:25
गुरु	28/12/2026 06:54

शुक्र - गुरु - बुध	
28/12/2026 06:54	
15/05/2027 06:30	
बुध	16/01/2027 20:03
केतु	24/01/2027 21:14
शुक्र	16/02/2027 21:10
सूर्य	23/02/2027 18:44
चंद्र	07/03/2027 06:42
मंगल	15/03/2027 07:53
राहु	05/04/2027 00:37
गुरु	23/04/2027 10:10
शनि	15/05/2027 06:30

शुक्र - गुरु - केतु	
15/05/2027 06:30	
11/07/2027 02:06	
केतु	18/05/2027 14:03
शुक्र	28/05/2027 01:19
सूर्य	30/05/2027 21:30
चंद्र	04/06/2027 15:08
मंगल	07/06/2027 22:40
राहु	16/06/2027 11:13
गुरु	24/06/2027 01:02
शनि	03/07/2027 00:56
बुध	11/07/2027 02:06

शुक्र - गुरु - शुक्र	
11/07/2027 02:06	
20/12/2027 10:06	
शुक्र	07/08/2027 03:26
सूर्य	15/08/2027 06:14
चंद्र	28/08/2027 18:54
मंगल	07/09/2027 06:10
राहु	01/10/2027 14:34
गुरु	23/10/2027 06:02
शनि	17/11/2027 22:54
बुध	10/12/2027 22:50
केतु	20/12/2027 10:06

शुक्र - गुरु - सूर्य	
20/12/2027 10:06	
07/02/2028 02:54	
सूर्य	22/12/2027 20:33
चंद्र	26/12/2027 21:57
मंगल	29/12/2027 18:08
राहु	06/01/2028 01:27
गुरु	12/01/2028 13:17
शनि	20/01/2028 06:21
बुध	27/01/2028 03:56
केतु	30/01/2028 00:06
शुक्र	07/02/2028 02:54

शुक्र - गुरु - चंद्र	
07/02/2028 02:54	
28/04/2028 06:54	
चंद्र	13/02/2028 21:14
मंगल	18/02/2028 14:52
राहु	01/03/2028 19:04
गुरु	12/03/2028 14:48
शनि	25/03/2028 11:14
बुध	05/04/2028 23:12
केतु	10/04/2028 16:50
शुक्र	24/04/2028 05:30
सूर्य	28/04/2028 06:54

शुक्र - गुरु - मंगल	
28/04/2028 06:54	
24/06/2028 02:30	
मंगल	01/05/2028 14:27
राहु	10/05/2028 02:59
गुरु	17/05/2028 16:48
शनि	26/05/2028 16:42
बुध	03/06/2028 17:53
केतु	07/06/2028 01:26
शुक्र	16/06/2028 12:42
सूर्य	19/06/2028 08:52
चंद्र	24/06/2028 02:30

शुक्र - गुरु - राहु	
24/06/2028 02:30	
17/11/2028 04:54	
राहु	16/07/2028 00:28
गुरु	04/08/2028 11:59
शनि	27/08/2028 15:10
बुध	17/09/2028 07:54
केतु	25/09/2028 20:27
शुक्र	20/10/2028 04:51
सूर्य	27/10/2028 12:10
चंद्र	08/11/2028 16:22
मंगल	17/11/2028 04:54

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - शनि - शनि	
17/11/2028 04:54	
19/05/2029 08:05	
शनि	16/12/2028 04:48
बुध	11/01/2029 03:27
केतु	21/01/2029 19:51
शुक्र	21/02/2029 08:22
सूर्य	02/03/2029 12:08
चंद्र	17/03/2029 18:24
मंगल	28/03/2029 10:47
राहु	24/04/2029 22:03
गुरु	19/05/2029 08:05

शुक्र - शनि - बुध	
19/05/2029 08:05	
30/10/2029 04:36	
बुध	11/06/2029 13:11
केतु	21/06/2029 02:35
शुक्र	18/07/2029 10:00
सूर्य	26/07/2029 14:38
चंद्र	09/08/2029 06:21
मंगल	18/08/2029 19:44
राहु	12/09/2029 09:37
गुरु	04/10/2029 05:57
शनि	30/10/2029 04:36

शुक्र - शनि - केतु	
30/10/2029 04:36	
05/01/2030 15:53	
केतु	03/11/2029 03:04
शुक्र	14/11/2029 08:57
सूर्य	17/11/2029 17:54
चंद्र	23/11/2029 08:51
मंगल	27/11/2029 07:18
राहु	07/12/2029 10:12
गुरु	16/12/2029 10:06
शनि	27/12/2029 02:29
बुध	05/01/2030 15:53

शुक्र - शनि - शुक्र	
05/01/2030 15:53	
17/07/2030 10:23	
शुक्र	06/02/2030 18:58
सूर्य	16/02/2030 10:17
चंद्र	04/03/2030 11:50
मंगल	15/03/2030 17:43
राहु	13/04/2030 15:41
गुरु	09/05/2030 08:33
शनि	08/06/2030 21:05
बुध	06/07/2030 04:30
केतु	17/07/2030 10:23

शुक्र - शनि - सूर्य	
17/07/2030 10:23	
13/09/2030 06:20	
सूर्य	20/07/2030 07:47
चंद्र	25/07/2030 03:26
मंगल	28/07/2030 12:24
राहु	06/08/2030 04:36
गुरु	13/08/2030 21:39
शनि	23/08/2030 01:25
बुध	31/08/2030 06:02
केतु	03/09/2030 15:00
शुक्र	13/09/2030 06:20

शुक्र - शनि - चंद्र	
13/09/2030 06:20	
18/12/2030 15:35	
चंद्र	21/09/2030 07:06
मंगल	26/09/2030 22:02
राहु	11/10/2030 09:02
गुरु	24/10/2030 05:28
शनि	08/11/2030 11:44
बुध	22/11/2030 03:26
केतु	27/11/2030 18:23
शुक्र	13/12/2030 19:55
सूर्य	18/12/2030 15:35

शुक्र - शनि - मंगल	
18/12/2030 15:35	
24/02/2031 02:51	
मंगल	22/12/2030 14:02
राहु	01/01/2031 16:56
गुरु	10/01/2031 16:50
शनि	21/01/2031 09:13
बुध	30/01/2031 22:37
केतु	03/02/2031 21:04
शुक्र	15/02/2031 02:57
सूर्य	18/02/2031 11:55
चंद्र	24/02/2031 02:51

शुक्र - शनि - राहु	
24/02/2031 02:51	
16/08/2031 14:42	
राहु	22/03/2031 03:26
गुरु	14/04/2031 06:37
शनि	11/05/2031 17:53
बुध	05/06/2031 07:46
केतु	15/06/2031 10:40
शुक्र	14/07/2031 08:38
सूर्य	23/07/2031 00:50
चंद्र	06/08/2031 11:49
मंगल	16/08/2031 14:42

शुक्र - शनि - गुरु	
16/08/2031 14:42	
17/01/2032 19:54	
गुरु	06/09/2031 04:12
शनि	30/09/2031 14:13
बुध	22/10/2031 10:34
केतु	31/10/2031 10:28
शुक्र	26/11/2031 03:20
सूर्य	03/12/2031 20:23
चंद्र	16/12/2031 16:49
मंगल	25/12/2031 16:44
राहु	17/01/2032 19:54

शुक्र - बुध - बुध	
17/01/2032 19:54	
12/06/2032 10:29	
बुध	07/02/2032 14:22
केतु	16/02/2032 03:37
शुक्र	11/03/2032 14:03
सूर्य	18/03/2032 21:59
चंद्र	31/03/2032 03:12
मंगल	08/04/2032 16:27
राहु	30/04/2032 16:14
गुरु	20/05/2032 05:22
शनि	12/06/2032 10:29

शुक्र - बुध - केतु	
12/06/2032 10:29	
11/08/2032 19:18	
केतु	15/06/2032 23:00
शुक्र	26/06/2032 00:28
सूर्य	29/06/2032 00:54
चंद्र	04/07/2032 01:39
मंगल	07/07/2032 14:09
राहु	16/07/2032 15:29
गुरु	24/07/2032 16:39
शनि	03/08/2032 06:03
बुध	11/08/2032 19:18

शुक्र - बुध - शुक्र	
11/08/2032 19:18	
31/01/2033 06:48	
शुक्र	09/09/2032 13:13
सूर्य	18/09/2032 04:12
चंद्र	02/10/2032 13:09
मंगल	12/10/2032 14:38
राहु	07/11/2032 11:33
गुरु	30/11/2032 11:29
शनि	27/12/2032 18:54
बुध	21/01/2033 05:20
केतु	31/01/2033 06:48

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भ्रामरी 3 वर्ष 5 मास 26 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
21/06/1975		17/12/1978		17/12/1983		16/12/1989		16/12/1996	
17/12/1978		17/12/1983		16/12/1989		16/12/1996		16/12/2004	
	21/06/1975	भद्रि	27/08/1979	उल्क	16/12/1984	सिद्ध	27/04/1991	संक	26/09/1998
भद्रि	17/12/1975	उल्क	27/06/1980	सिद्ध	15/02/1986	संक	16/11/1992	मंग	17/12/1998
उल्क	16/08/1976	सिद्ध	17/06/1981	संक	17/06/1987	मंग	26/01/1993	पिंग	28/05/1999
सिद्ध	27/05/1977	संक	28/07/1982	मंग	17/08/1987	पिंग	17/06/1993	धांय	26/01/2000
संक	17/04/1978	मंग	16/09/1982	पिंग	17/12/1987	धांय	16/01/1994	भ्राम	16/12/2000
मंग	28/05/1978	पिंग	27/12/1982	धांय	16/06/1988	भ्राम	27/10/1994	भद्रि	26/01/2002
पिंग	17/08/1978	धांय	28/05/1983	भ्राम	15/02/1989	भद्रि	17/10/1995	उल्क	28/05/2003
धांय	17/12/1978	भ्राम	17/12/1983	भद्रि	16/12/1989	उल्क	16/12/1996	सिद्ध	16/12/2004

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
16/12/2004		16/12/2005		17/12/2007		17/12/2010		17/12/2014	
16/12/2005		17/12/2007		17/12/2010		17/12/2014		17/12/2019	
मंग	26/12/2004	पिंग	26/01/2006	धांय	17/03/2008	भ्राम	28/05/2011	भद्रि	27/08/2015
पिंग	15/01/2005	धांय	28/03/2006	भ्राम	17/07/2008	भद्रि	17/12/2011	उल्क	27/06/2016
धांय	15/02/2005	भ्राम	17/06/2006	भद्रि	16/12/2008	उल्क	16/08/2012	सिद्ध	17/06/2017
भ्राम	28/03/2005	भद्रि	26/09/2006	उल्क	17/06/2009	सिद्ध	27/05/2013	संक	28/07/2018
भद्रि	17/05/2005	उल्क	26/01/2007	सिद्ध	16/01/2010	संक	17/04/2014	मंग	16/09/2018
उल्क	17/07/2005	सिद्ध	17/06/2007	संक	16/09/2010	मंग	28/05/2014	पिंग	27/12/2018
सिद्ध	26/09/2005	संक	27/11/2007	मंग	17/10/2010	पिंग	17/08/2014	धांय	28/05/2019
संक	16/12/2005	मंग	17/12/2007	पिंग	17/12/2010	धांय	17/12/2014	भ्राम	17/12/2019

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
17/12/2019		16/12/2025		16/12/2032		16/12/2040		16/12/2041	
16/12/2025		16/12/2032		16/12/2040		16/12/2041		17/12/2043	
उल्क	16/12/2020	सिद्ध	27/04/2027	संक	26/09/2034	मंग	26/12/2040	पिंग	26/01/2042
सिद्ध	15/02/2022	संक	16/11/2028	मंग	17/12/2034	पिंग	15/01/2041	धांय	28/03/2042
संक	17/06/2023	मंग	26/01/2029	पिंग	28/05/2035	धांय	15/02/2041	भ्राम	17/06/2042
मंग	17/08/2023	पिंग	17/06/2029	धांय	26/01/2036	भ्राम	28/03/2041	भद्रि	26/09/2042
पिंग	17/12/2023	धांय	16/01/2030	भ्राम	16/12/2036	भद्रि	17/05/2041	उल्क	26/01/2043
धांय	16/06/2024	भ्राम	27/10/2030	भद्रि	26/01/2038	उल्क	17/07/2041	सिद्ध	17/06/2043
भ्राम	15/02/2025	भद्रि	17/10/2031	उल्क	28/05/2039	सिद्ध	26/09/2041	संक	27/11/2043
भद्रि	16/12/2025	उल्क	16/12/2032	सिद्ध	16/12/2040	संक	16/12/2041	मंग	17/12/2043

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
17/12/2043		17/12/2046		17/12/2050		17/12/2055		16/12/2061	
17/12/2046		17/12/2050		17/12/2055		16/12/2061		16/12/2068	
धांय	17/03/2044	भ्राम	28/05/2047	भद्रि	27/08/2051	उल्क	16/12/2056	सिद्ध	27/04/2063
भ्राम	17/07/2044	भद्रि	17/12/2047	उल्क	27/06/2052	सिद्ध	15/02/2058	संक	16/11/2064
भद्रि	16/12/2044	उल्क	16/08/2048	सिद्ध	17/06/2053	संक	17/06/2059	मंग	26/01/2065
उल्क	17/06/2045	सिद्ध	27/05/2049	संक	28/07/2054	मंग	17/08/2059	पिंग	17/06/2065
सिद्ध	16/01/2046	संक	17/04/2050	मंग	16/09/2054	पिंग	17/12/2059	धांय	16/01/2066
संक	16/09/2046	मंग	28/05/2050	पिंग	27/12/2054	धांय	16/06/2060	भ्राम	27/10/2066
मंग	17/10/2046	पिंग	17/08/2050	धांय	28/05/2055	भ्राम	15/02/2061	भद्रि	17/10/2067
पिंग	17/12/2046	धांय	17/12/2050	भ्राम	17/12/2055	भद्रि	16/12/2061	उल्क	16/12/2068

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
16/12/2068		16/12/2076		16/12/2077		17/12/2079		17/12/2082	
16/12/2076		16/12/2077		17/12/2079		17/12/2082		00/00/0000	
संक	26/09/2070	मंग	26/12/2076	पिंग	26/01/2078	धांय	17/03/2080	भ्राम	28/05/2083
मंग	17/12/2070	पिंग	15/01/2077	धांय	28/03/2078	भ्राम	17/07/2080	भद्रि	21/06/2083
पिंग	28/05/2071	धांय	15/02/2077	भ्राम	17/06/2078	भद्रि	16/12/2080		00/00/0000
धांय	26/01/2072	भ्राम	28/03/2077	भद्रि	26/09/2078	उल्क	17/06/2081		00/00/0000
भ्राम	16/12/2072	भद्रि	17/05/2077	उल्क	26/01/2079	सिद्ध	16/01/2082		00/00/0000
भद्रि	26/01/2074	उल्क	17/07/2077	सिद्ध	17/06/2079	संक	16/09/2082		00/00/0000
उल्क	28/05/2075	सिद्ध	26/09/2077	संक	27/11/2079	मंग	17/10/2082		00/00/0000
सिद्ध	16/12/2076	संक	16/12/2077	मंग	17/12/2079	पिंग	17/12/2082		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 4
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	88%	धनार्जन, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	75%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन, धन
मूंगा	मंगल	56%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, सुख
हीरा	शुक्र	47%	व्यय, व्यावसायिक हानि, पराक्रम हानि
लहसुनिया	केतु	47%	व्यावसायिक हानि, व्यय
मोती	चंद्र	41%	ग्रह कलेश, व्यय
पुखराज	गुरु	37%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट
गोमेद	राहु	25%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
नीलम	शनि	9%	हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

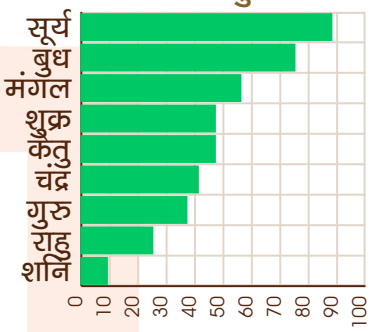

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	17/01/1992	75%	16%	38%	81%	37%	55%	34%	38%	22%
बुध	17/01/2009	94%	16%	56%	88%	37%	55%	9%	25%	47%
केतु	17/01/2016	75%	16%	62%	75%	37%	55%	0%	0%	61%
शुक्र	17/01/2036	75%	16%	56%	81%	37%	61%	22%	38%	55%
सूर्य	17/01/2042	100%	52%	62%	75%	49%	22%	0%	0%	22%
चंद्र	17/01/2052	94%	58%	56%	81%	37%	47%	9%	0%	22%
मंगल	17/01/2059	94%	52%	69%	62%	49%	47%	9%	0%	55%
राहु	17/01/2077	75%	16%	38%	75%	37%	55%	22%	50%	22%
गुरु	17/01/2093	94%	52%	62%	62%	56%	22%	9%	25%	47%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए माणिक्य व पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पन्ना आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मूंगा शुभ रत्न है। इसकी शुभता स्व-दशा या मित्र दशाओं में बढ़ जाती है। अतः इस रत्न को इसकी शत्रु दशा में न पहनकर मित्रादि की दशा में पहनकर इसके शुभ फलों का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसकी शत्रु दशा में आप रुद्राक्ष पहनकर या दान, मंत्र जाप आदि से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

हीरा, लहसुनिया, मोती, पुखराज व गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

नीलम पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत

विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप धनवान, बलवान और सुखी बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप स्वाभिमानी बनेंगे। रत्न धारण से आप तपस्वी और योगी समान बनेंगे। आपका जीवन सदाचार युक्त होगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। माणिक्य रत्न आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। उच्च अधिकारियों से आपके संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आपको महत्त्वाकांक्षी बनाएगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते है। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यो को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंड़ली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपतिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है।

आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपका संचित धन बढ़ा सकता है। पन्ना रत्न को धारण कर आप के परिवार में वृद्धि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके कुटुंम्ब को एकसूत्र में बांधकर रख सकता है। पन्ना बुध आयेश का रत्न होने के कारण आपको बौद्धिक बल से धनार्जन करने के भरपूर अवसर दे सकता है। पन्ना रत्न की शुभता से आप को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त हो सकती है। साथ ही इस रत्न को धारण कर आप अपनी वाकशक्ति में मधुरता एवं चतुरता दोनों का मिश्रण हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। मंगल की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपके जीवन क्षेत्र की बाधाओं को दूर करेगा। रत्न शुभता से आपके अनेक कार्य आपके शुभचिन्तकों के द्वारा पूर्ण होंगे। आप नियम-कानून का सख्ती से पालन करेंगे। मूंगा रत्न आपको दुर्घटना, अप्रत्याशित घटनाओं से बचाएगा। यह रत्न आपके धन संचय के लिए भी अनुकूल है। रत्न शुभता से आपको आमदनी भी बहुत अच्छी होगी। मूंगा रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। मूंगा रत्न की शुभता से आपकी वाणी में मधुरता आएगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते है। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते है। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती

से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आपका वैवाहिक जीवन तनाव युक्त हो सकता है। हीरा रत्न आपके व्ययों को सौंदर्य विषयों पर केन्द्रित कर सकता है। इसके साथ ही रत्न प्रभाव से आपके व्यय ग्रहस्थ जीवन के सुख प्राप्ति से संबंधी हो सकते है। विदेश गमन, शयन सुख को भी यह रत्न प्रभावित कर रहा है। हीरा रत्न आपके मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को बाधित कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हो सकता है कि आपका धन-धान्य, आय एवं उन्नति आशातीत न हों। यह भी संभावित है कि आप अपने जीवन साथी का समय पर साथ न दे पाएं। दायित्वों के निर्वाह में आपसे कहीं कुछ त्रुटि हो सकती है। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ कमजोर हो सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। शुक्र रत्न हीरा धारण से आप मित्रवर्ग में विपरीत लिंग को विशेष रूप से आकर्षित कर सकते है। यह रत्न आपकी बहुमुखी प्रतिभा को सीमित कर सकता है। अपनी कलाएं दिखाने के आपको अवसर कम मिल सकते है। हीरा रत्न प्रभाव विवाह के बाद आपके भाग्योदय को बाधित कर सकता है। रत्न प्रभाव आपकी कामुकता भाव में वृद्धि कर रहा है। यह रत्न आपको मित्रों से धोखे दिला सकता है। हीरा रत्न कार्यक्षेत्र में आपको भौतिक सुख सुविधाओं की कमी व सवारी सुख का अभाव दे सकता है। धारण करने पर आपको उच्चाधिकार प्राप्ति के लिए विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण कर आप की बौद्धिक योग्यता में कमी आ सकती है। रत्न प्रभाव से आपकी दार्शनिक प्रवृति का ह्रास हो सकता है। दूसरों के लिए आपमें ईर्ष्या का भाव आ सकता है। अयोग्य पात्र को भी आप आश्रय दे सकते है। जीवन में आपको उत्तम संपदा की कमी हो सकती है। आपके कारण स्वजनों को भी कष्ट हो सकता है। लहसुनिया रत्न आपके दुर्भाग्य में वृद्धि कर सकता है। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में दुर्घटनाएं दे सकता है। इस रत्न के कारण आपके पिता से अच्छे संबंधों में कमी हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपके विरोधियों को बढ़ा सकता है। यात्राओं की अधिकता से कष्ट दे सकता है। आप मानसिक रूप से असंतुष्ट रह सकते हैं।

केतु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। अतः

लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपका अपनी माता और परिवार से आत्मिक लगाव कुछ कम हो सकता है। उदारता, प्रसन्नता और मानसिक शांति की कमी आप महसूस करेंगे। यह रत्न आपकी माता के स्वास्थ्य को आंशिक कमजोर कर सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है। मोती रत्न प्रभाव से आपको आराम, अच्छे वाहन, अच्छे मित्र और अचल संपत्ति की प्राप्ति के लिए सामान्य से अधिक मेहनत करनी पड सकती है। इसके अलावा यह रत्न आपकी स्मरणशक्ति को भी कमजोर करेगा। रत्न शक्तियां आपमें परोपकार भावना के विकास को बाधित करेगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण से आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको व्यय से संबंधित चिंताएं अधिक हो सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपके दांपत्य जीवन में भी अनियमितता का कारण बन सकता है। रत्न धारण से आपके व्यावसायिक कार्यो में परेशानियां बनी रहेंगी। यह रत्न आपको शारीरिक दुर्बलता दे सकता है। कुसंगति के व्यक्ति आपको प्रिय हो सकते है। जल से शारीरिक हानि का भय आपको हो सकता है। रत्न प्रभाव नजला, जुकाम से आपको पीड़ित कर सकता है। आप क्रोधी, हठी एवं निराशाभाव युक्त हो सकते है। नेत्रादि रोग और कुटुम्ब के कारण आपके दुःख बढ़ सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती है। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते है। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे है। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टम भाव के स्वामी गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता

है। पुखराज रत्न धारण से आप विदयाभिमानी हो सकते है। पुखराज रत्न आपमें विनम्रता भाव की कमी ला सकता है। आप प्रतिकूल बुद्धि के स्वामी हो सकते है। यह रत्न आपके शत्रुओं में वृद्धि कर रहा है। रत्न प्रभाव से आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। पुखराज रत्न आपके पिता को ऋणी कर सकता है। सरकारी नौकरी प्राप्ति में यह रत्न परेशानियां दे सकता है। नीच संगति में रहना पड़ सकता है। यह रत्न आपमें आलस्य भाव को बढ़ाएगा। रत्न धारण के बाद आपको मधुमेह रोग से बचना होगा।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करने से आपके अपनी माता से वैचारिक मतभेद सामने आ सकते है। किसी प्राशासनिक व्यक्ति के द्वारा आपका अहित हो सकता है। चित्त में अस्थिरता और भ्रम की स्थिति बढ़ सकती है। गोमेद रत्न आपको देश की अपेक्षा प्रवास में अधिक रख सकता है। सभी सुख-सुविधाओं के होते हुए भी आपका मन दुःखी हो सकता है। रत्न प्रभाव से आप मानसिक अशांति का अनुभव करने लगेंगे। यह भी संभावित है कि विपरीत समय में जीवन साथी का सहयोग प्राप्त न हो पायें। गोमेद रत्न आपकी उन्नति की राहों में रुकावटें ला सकता है। समाज में आपको यथायोग्य सम्मान न मिलने से आपकी भावनाएं आहत हो सकती है।

राहु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल आठवें भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप आय क्षेत्रों में प्रपंचों और कपट का शिकार हो सकते है। संतान प्राप्ति में आपको विलम्ब हो सकता है। सुखों का उपयोग आप नहीं कर पाएंगे. आपको शेयर सट्टा, जुआ इत्यादि क्षेत्रों में हानि हो सकती है। आपके अपनी संतान से मतभेद हो सकते है। यह रत्न आपको लोभी और सुखों से वंचित कर सकता है। आपको कोई दीर्घकालिक रोग हो सकता है। अर्थात आपके रोगी होने पर आपको शीघ्र स्वास्थ्य लाभ नहीं हो पाएगा। यह रत्न धन संपत्ति की अपर्याप्तता दे सकता है। पंडितों और विद्वान वर्गो से आपको धनहानि हो सकती है। नीलम रत्न आपमें संतोष की कमी कर सकता है। रत्न धारण से आपके स्वभाव में निराशा का भाव आ सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न

आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(17/01/2016 - 17/01/2036)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, मूंगा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(17/01/2036 - 17/01/2042)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और हीरा, लहसुनिया, नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(17/01/2042 - 17/01/2052)

चन्द्र की दशा में आपका माणिक्य व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(17/01/2052 - 17/01/2059)

मंगल की दशा में आपका माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पन्ना, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व हीरा रत्न नेष्ट हैं और नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(17/01/2059 - 17/01/2077)

राहु की दशा में आपका माणिक्य व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और नीलम, लहसुनिया व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(17/01/2077 - 17/01/2093)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पन्ना, पुखराज व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और हीरा व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

ढठवसकझढथ्वदजझढस्मवच्सउभ्पदकप01झ010ध्झ आपका शुभ रत्न - माणिक्य ढध थ्वदजझढठवसकझ

आपका जन्म सिंह राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी सूर्य होता है। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है, क्योंकि सभी ग्रह इसके चारों ओर अपनी अपनी कक्षा में चक्कर लगाते हैं। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः सिंह राशि के लग्न वाले जातकों को सिंह राशि के स्वामी ग्रह सूर्य को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य ग्रह के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी सूर्य राजा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राजा से लाभ जैसे राजनीतिक क्षेत्र में सफलता, उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को पिता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। सूर्य ग्रह हृदय का प्रतिनिधि आत्मा आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको हृदय से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

माणिक्य रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात रविवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल सूर्य की होरा में श्रेष्ठ होता है। रविवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय सूर्य की होरा का होता है। माणिक्य को यदि रविवार के साथ-साथ सूर्य के नक्षत्र अर्थात् कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

माणिक्य को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नारंगी रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, सूर्य के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

सूर्य का मंत्र - ऊँ घृणि सूर्याय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि सूर्य से संबंधित पदार्थ जैसे सफेद चंदन, घी, लाल कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन सूर्य का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या सूर्य को तांबे के पात्र से जल दें और सूर्य को नमस्कार करें तो यह माणिक्य रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

सिंह लग्न वाले जातक यदि माणिक्य रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

यह आपके शारीरिक सौन्दर्य में न्यूनता, आय क्षेत्र में बाधाएं, अल्प आय, आर्थिक चिंता, कुटुंब से अल्प सुख, पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। दीर्घकालीन रोग आपकी चिंताएं बढ़ा सकते हैं। मंगल का अष्टम भाव में स्थित होने से आप मांगलिक योग से पीड़ित है। दाम्पत्य जीवन कष्टकारी हो सकता है। संतान को भी कष्ट की संभावनाएं, प्रवास में धन हानि, मुख, नेत्र व कान के रोग, ऋण ग्रस्तता बढ़ोतरी हो रही है।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन

और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यों पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते है, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखे। जीवन साथी की भावनाओँ को आहात करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/06/1975-23/07/1975	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल जन्म कुंडली में अष्टम भाव में स्थित है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु आपकी कुण्डली में शास्त्रानुसार मंगली दोष समाप्त हो जाता है अतः आपको इसके अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बिना किसी विघ्न बाधाओं के समाप्त होंगे। यदा कदा अल्प मात्रा में पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा लेकिन किसी भी प्रकार से कोई हानि नहीं होगी। साथ ही इसके शुभ प्रभाव से आप उत्तम शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे एवं भाई बहनों का भी पूर्ण सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपना सम्पूर्ण जीवन सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ होगा परन्तु इसके प्रभाव से विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है। विवाह अत्यन्त ही सुखद वातावरण में सम्पन्न होगा तथा इसमें आपको किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं विघ्नों का सामना नहीं करना पड़ेगा। शादी के पश्चात भी जीवन सुखी रहेगा लेकिन यदा कदा इससे पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा परन्तु आपके सभी कार्य व्यवधान रहित सम्पन्न होते रहेंगे। आप जीवन में पूर्ण सुख तथा आनन्द की अनुभूति करेंगे।

आपकी कुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके सभी सांसारिक व्यापारिक तथा परिवारिक कार्य प्रायः निर्विघ्न रूप से समाप्त होंगे। अपने सभी कार्यों में आप सफलता प्राप्त करते रहेंगे। कभी कभी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे तथा जीवन में आर्थिक रूप से प्रायः सुदृढ़ रहेंगे। साथ ही धनैश्वर्य से भी सुसम्पन्न रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप उच्च शिक्षा को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। तथापि यदा कदा कार्य में बाधाएं उपस्थित

होंगी परन्तु आप उसे दूर करने में सफल होंगे। साथ ही आपका पारिवारिक जीवन भी सुख एवं शान्ति से परिपूर्ण रहेगा। तृतीय भाव पर भी मंगल की दृष्टि होने से आप भाई बहनों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में उनसे भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सौभाग्यशाली सिद्ध होंगे। मंगल के इस शुभ प्रभाव से आपका जीवन सुखद एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुखमय एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी गैरमांगलिक या मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका उचित नियमानुसार मांगलिक दोष समाप्त हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप विवाह करेंगे तो आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। सभी प्रकार से आप जीवन में पूर्ण सौभाग्य, धनैश्वर्य एवं मान सम्मान प्राप्त करके समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में यश अर्जित करेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म पत्री मिलान के समय अष्टम भाव में ही यदि कन्या की जन्म कुण्डली में मंगल स्थित हो तो इसकी यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल होने से आपके जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा पत्नी का स्वास्थ्य भी खराब रहेगा। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ प्रभावों में वृद्धि करेगा तथा आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सावधानी पूर्वक सोच विचार कर अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे जीवन में किसी भी प्रकार से अशान्ति या कष्ट उत्पन्न न हो सके।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 21 हैं। दो एवं एक के योग से आपका मूलांक 3 होता है। मूलांक तीन का अधिपति गुरु ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा एक का सूर्य है। अतः आपके जीवन में गुरु, चन्द्र तथा सूर्य ग्रह का शुभ-अशुभ प्रभाव रहेगा। मूलांक स्वामी गुरु के प्रभाव से आप एक विद्वान व्यक्ति कहलायेंगे। विद्या के क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी। धर्म-कर्म के कार्यों में रुचि रखेंगे। अधिक आयु पर आप आध्यात्म के क्षेत्र में चले जायेंगे। आप एक अनुशासन प्रिय व्यक्ति रहेंगे एवं अपने अधीनस्थों से अपेक्षा रखेंगे कि वह भी अनुशासन में रहें । आप काम में शिथिलता या देरी पसन्द नहीं करेंगे। इससे आपके मातहत आपके विरोधी होंगे।

सूर्य के प्रभाव से आप एक दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति होंगे। स्वभाव में हठीपन भी रहेगा एवं आप अपने कार्यक्षेत्र में सूर्य के समान ही चमकेंगे। लेकिन चन्द्र प्रभाव से कभी कभी अंधेरे का सामना करना पड़ेगा। इससे आपके मन में निराशा के भाव आयेंगे। आपका जीवन सन्तुलित रहेगा एवं ऐसे कार्यों में आपका मन लगेगा जहाँ कार्य ईमानदारी से होता हो। आप स्वयं अपनी मेहनत तथा सच्चाई पर भरोसा करेंगे और इसी के सहारे सफलताएं अर्जित करेंगे।

आपकी ऐसे कार्यों में रुचि रहेगी जहाँ बुद्धिजन्य कार्य होता हो। लेखन, पठन-पाठन, भाषण, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में कार्य करने पर आपको अच्छी सफलताएं प्राप्त होंगी। सूर्य, चन्द्र, गुरु के संयुक्त प्रभाव से आप अपने जीवन में उच्चता को अवश्य प्राप्त करेंगे एवं आपकी अन्तिम अवस्था काफी खुशमय रहेगी।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होंगे एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक होंगे।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगे। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 3 है तथा आपका भाग्यांक 4 है। मूलांक 3 का स्वामी गुरु तथा भाग्यांक 4 का स्वामी हर्षल है। मूलांक 3 तथा भाग्यांक 4 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश कभी आपका मूलांक साथ देगा, तो कभी आपका भाग्यांक साथ देगा और कभी-कभी इन दोनों अंकों में कुछ अशुभ घटनाएं भी घटित हो सकती हैं। साधारणतः मूलांक-भाग्यांक के प्रभाववश आपके रोजगार-व्यापार के क्षेत्र बदलते रहेंगे। कभी आप अचानक सफलता प्राप्त

करेंगे, तो कभी आपको असफलता का सामना भी करना पड़ेगा। आप रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में परिवर्तनशील रहेंगे, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र को अपनाएंगे एवं कठिन से कठिन कार्यों को पूर्ण करने में अपनी पूरी शक्ति लगा देंगे। आपका कार्यक्षेत्र विस्फोटक रहेगा तथा अचानक आप समाज में चर्चित हो जाया करेंगे। लेकिन यह प्रगति स्थायी नहीं रहेगी। परिवर्तनशीलता के कारण आप वांछित सफलता अर्जित नहीं कर पाएंगे। इसका आपको जीवन पर्यंत मलाल रहेगा। यदि आप धैर्य के साथ कार्य करें एवं अपनी परिवर्तनशील प्रकृति पर अंकुश रखें, तब निश्चित ही सफलता आपके द्वार चूमेगी।

आपका भाग्योदय 22 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा। 31 वें वर्ष में उन्नति प्राप्त होगी तथा 40 वें वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 4 की मित्रता 1 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं उन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में बुध हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, उच्चपद पर आसीन, सुगठित शरीर, दिखावा पसन्द करने वाला, शास्त्रज्ञ, व्यायामप्रिय, धनवान्, गम्भीर, मधुरभाषी, विलासी एवं रतिशास्त्रज्ञ होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक तेजस्वी साहसी एवं पराक्रमी होते हैं। उनके अंदर आत्मविश्वास का भाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहता है तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में उन्नति प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों से ये प्रायः युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुख पूर्वक इसका उपभोग करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इनकी प्रवृति धार्मिक भी होती है तथा स्वभाव में परोपकार का भाव भी रहता है फलतः ये पूर्ण विश्वास के योग्य होते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्रों में ये किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं जिससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश समाज में विद्यमान रहता है साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप निर्भय पुरूष होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यकलापों को निर्भयता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा उन्नति मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे फलतः आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

आपके हृदय में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के प्रति स्नेह के भाव का प्रर्दशन करेंगे। आपको स्वपुरूषार्थ से जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगे तथा आपके शत्रु या प्रतिद्वन्दी आपसे भयभीत होंगे परन्तु यदि आप अन्य जनों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार करें तो आप समाज में लोक प्रियता तथा अतिरिक्त प्रतिष्ठा भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं।

लग्न में लग्नेश सूर्य की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप में शारीरिक बल की प्रधानता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें इच्छित सफलता प्राप्त करके जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। राजनीति या सरकार अथवा व्यापार आदि में आप उन्नतिशील रहेंगे तथा इन क्षेत्रों में आपकी श्रेष्ठता बनी रहेगी।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा। अतः यदा कदा आप अनावश्यक क्रोध या उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। योग आदि के प्रति भी आपकी इच्छा रहेगी तथा समय समय पर योगाभ्यास करेंगे। आप में गम्भीरता का भाव विद्यमान होगा फलतः आपके कार्य धैर्य एवं गम्भीरतापूर्वक सम्पन्न होंगे जिससे आपको सफलता प्राप्त होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में सत्संग आदि में भी अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं। आपको भ्रमण या पर्वतीय क्षेत्रों में घूमना रूचिकर लगेगा। अतः आप समय समय पर ऐसे स्थानों की सैर करते रहेंगे। इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक समस्त सुखों का उपभोग करते

हुए आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा आपात्काल के लिए आपके पास कुछ न कुछ अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। फलतः समय समय पर आप अपने घर में अन्य जनों को आंमत्रित करते रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन शांत तथा प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा परिवार में समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही परस्पर सेवा तथा सहयोग का भाव भी विद्य मान रहेगा। लेकिन पैतृक सम्पति की प्राप्ति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा जो कुछ अर्जित करेंगे अपने परिश्रम एवं पराक्रम से करेंगे।

यह स्थान वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा इसका स्वामी बुध वाणी का प्रतिनिधि है अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में धुरता रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही अपने विचारों को भी आप सरल एवं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में सफल होंगे। इसके साथ ही आप अपनी विद्वता से धनार्जन करेंगे तथा स्वर्ण आदि बहुमूल्य धातुओं को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप धन वैभव से युक्त होकर आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप एक प्रसन्नचित व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र होगी। साथ ही दीर्घकाल तक किसी वस्तु को याद रख सकेंगे तथा शीघ्र ही ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा इनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आप भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख सुविधाएं एवं आधुनिक उपकरणों से युक्त करने में हमेशा तत्पर रहेंगे परन्तु यदि वे आपकी अपेक्षा अनुसार व्यवहार नहीं करते है या कोई कार्य नहीं करते हैं तो आप शीघ्र उनपर उत्तेजित हो जाएंगे परन्तु पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए अपने पर नियंत्रण रखने में भी सफल रहेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा उत्तेजना में कभी भी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगे। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगे तथा समाज में आदरणीय भी समझें जाएंगे। अपने सुख एवं वैभव पूर्ण जीवन के लिए आपको संचार संबन्धी उपकरण यथा दूर भाष दूरदर्शन या अन्य वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा आनन्द पूर्वक आप इनका उपभोग भी करेंगे। आप रोमांटिक संगीत के प्रिय रहेंगे तथा समय समय पर संगीत से अपना तथा अन्य जनों का मनोरंजन करेंगे। आपकी आनन्ददायक यात्राएं होती रहेंगी तथा दूर समीप की यात्राओं से इच्छित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। साथ ही यात्रा के मध्य नवीन मित्रों को बनाने में सफल रहेंगे तथा संबन्धियों से भी आप सहयोग प्राप्त करेंगे। आप सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे साथ ही अध्ययन में भी रूचिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचलता से युक्त रहेगा तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। परन्तु नौकरों तथा सेवकों की बहुलता रहेगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी मंगल है तथा राहु भी योग कारक मंगल की राशि में चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सुखऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे तथा भौतिक सुख संसाधनों की प्रचुरता रहेगी जिसका आप सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। यद्यपि यदा कदा सुखों को अर्जित करने में आपको परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा लेकिन इसका आपको फल अवश्य मिलेगा। समाज में आपका उचित स्तर होगा तथा मान प्रतिष्ठा भी बनी रहेगी।

आप एक भाग्यवान व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व प्राप्त होगा। नाना से भी आप के न्यूनाधिक रूप से चल एवं अचल सम्पत्ति मिलने के योग भी बनते है। लेकिन यदि आप किसी विवादित सम्पत्ति का क्रय-विक्रय करेंगे या उससे संबंध रखेंगे तो इससे अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अतः ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

जीवन में आप उत्तम आवास से युक्त होंगे। आपका घर विस्तृत एवं आधुनिक रूप से पूर्ण सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने के लिए आप स्वयं तथा पारिवारिक जनों को भी प्रोत्साहित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु संबंधों में औपचारिक्ता अधिक रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आपको पूर्ण मिलेगा एवं इनकी संस्था एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माता जी तेजस्वी बुद्धिमान शिक्षित एवं व्यावहारिक महिला होंगी तथा परिवार के सदस्यों का पूर्ण ध्यान रखेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान होगा तथा अवसरानुकूल आपको विशिष्ट आर्थिक या अन्य प्रकार से नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा सुख-दुःख में उनको कोई कष्ट नहीं होने देंगे लेकिन यदा कदा सैद्धांतिक मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव हो सकता है। अतः मतभेदों की उपेक्षा ही करनी चाहिए।

अध्ययन के प्रति आपकी प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से आप प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्रात करने में समर्थ होंगे। इसी परिपेक्ष्य में आप अच्छी श्रेणी में स्नातक परीक्षा उतीर्ण करेंगे जिससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप तकनीकी शिक्षा में भी वांछित सफलता प्राप्त कर सकते है।

चतुर्थ भाव में नैर्सगिक पापी ग्रह राहु की स्थिति के प्रभाव से मध्यावस्था के बाद आपको न्यूनाधिक रूप से रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अतः युवावस्था से ही यदि आप खान-पान का विशेष ध्यान रखेंगे तो उपरोक्त समस्याओं में कभी आएगी जिससे आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप उद्यमी साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे। उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा इसके लिए प्रयत्न भी करेंगे जिसमें आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च श्रेणी के धार्मिक दार्शनिक तथा ईश्वर को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा धर्म तथा शास्त्र के अनुसार ही अपने अधिकांश सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से आप मुक्त विचार धारा के व्यक्ति आत्म विश्वासी तथा धार्मिक क्षेत्र में उन्नति करने वाले होंगे तथा इसमें आपको श्रखयाति तथा मान सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी सीखने की शक्ति अत्यंत ही तीव्र होगी तथा शीघ्र ही आप नवीन विचारों का सृजन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही आपका अन्तर्ज्ञान हमेशा सही रहेगा।

आपकी पत्नी बुद्धिमान होगी तथा वे शांत स्वभाव की चतुर महिला होंगी। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा तथा समता के भाव की उत्पति वृद्धावस्था में होगी जिससे आप वांछित आदर एवं श्रखयाति प्राप्त करेंगे। आपके साथ में वह स्थितियों को अनुकूल बनाने में समर्थ रहेंगी। आपकी संतति संख्या सीमित रहेगी तथा उनका स्वभाव भी उत्तम रहेगा। साथ ही वे बुद्धिमान होंगे एवं अपने अपने क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करेंगे। वृद्धावस्था में आपकी वे श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे वे सभी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे वैदिक ज्ञान या ज्योतिष पर भी आपकी श्रद्धा रहेगी इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से सुसम्पन्न, शत्रुनाशक, सज्जनों की सेवा करने वाले तथा भाग्यशाली पुत्रों से युक्त रहेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से कार्य क्षेत्र में आपको मजबूत विपक्ष का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रहें हो या अपने व्यवसाय के कार्य में किसी साझेदार का चुनाव कर रहें हो तो इससे साझेदार या जिसके लिए कार्य कर रहे है शत्रुता का भाव आरंभ हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक व्यक्ति है तथा यत्नपूर्वक शत्रुता के भाव की उपेक्षा करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु आपके कार्य कलापों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अन्य जन प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे तथा इसी सन्दर्भ में कोई मुकद्दमेबाजी प्रारंभ हो सकती है। आप अपने धैर्य शान्ति तथा प्रतिभा से अपने शत्रु या विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही कभी भी शत्रुपक्ष की गतिविधियों से विचलित नहीं होंगे।

आपकी उचित सेवा करने के लिए आपके पास अच्छे नौकर होंगे लेकिन अधिक होने पर उनमें से कोई एक यदा कदा आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः सेवकों का चुनाव करते समय सावधान तथा सतर्क रहें। आपके संबन्धी कार्य क्षेत्र में आपके लिए हानि कारक रहेंगे तथा वास्तव में वे ही आपके मुख्य शत्रु होंगे अतः सोच समझकर अपने कार्यो को सम्पन्न करें। आप सीमित एवं आवश्यकता के अनुसार ही व्यय करेंगे। अतः ऋण आदि की आवश्यकता के अवसर बहुत कम आएंगे लेकिन युवास्था में यदा कदा ऐसी स्थिति आएगी परन्तु उसको संभालने में आप समर्थ रहेंगे। आपके मामा मामियों के प्रति पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक या अन्य सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे। साथ ही मामियों का मामाओं पर प्रभाव रहेगा।

आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे यद्यपि आप मुकद्दमे बाजी की उपेक्षा करेंगे तथा कोर्ट से बाहर ही उसका समाधान चाहेंगे। यदि ऐसा नहीं होता तो तभी आप कोर्ट में जाएंगे। इस प्रकार स्वपराक्रम एवं प्रभाव से शत्रु एवं विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करके अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया कुम्भराशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव कुल में श्रेष्ठ पित प्रकृति व्ययशील एवं सेवकों से युक्त रहता है तथा वह पराक्रमी तेजस्वी एवं शिक्षित होता है एवं स्वाभिमान की भावना भी मन में विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की स्वाभिमानी महिला होंगी तथा सांसारिक कार्य कलापों को दक्षता से सम्पन्न करेंगी। कुम्भ राशि के प्रभाव से वह कुल में श्रेष्ठ होंगी तथा सेवकों से भी युक्त रहेंगी परन्तु उनकी प्रवृति अधिक व्ययशील होगी एवं सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहेगी। लेकिन कर्तव्य परायणता का भाव विद्यमान रहेगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर रहेंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण किंचित लालिमा लिए गौरवर्ण होगा तथा कद ऊंचा होगा साथ ही शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय होगा एवं शरीर के सभी अंग प्रत्यंग सुडौल तथा पुष्ट रहेंगे लेकिन वायुतत्व कुम्भ राशि के प्रभाव से शरीर में पतलापन रहेगा। इससे उनका सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा। सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वे सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कला एवं भौतिक वस्तुओं के प्रति भी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में शनि की राशि के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब की संभावना रहेगी। आपका विवाह प्रेम विवाह होगा या स्वयं ही कन्या का चुनाव करेंगे। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा सहयोग का भाव विद्यमान होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सहमति से सम्पन्न करेंगे। परन्तु दोनों के स्वभाव में तेजस्विता के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी जिससे अल्प समय के लिए संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वे मध्यम होंगे। सास ससुर से भी आपके संबंध विशेष अच्छे नहीं होंगे एवं एक दूसरे के प्रति यथोचित सम्मान एवं स्नेह के भाव की न्यूनता रहेगी। अतः आपस में मेल मिलाप भी कम ही होगा।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में वह उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनकी तेजस्वी प्रकृति से अप्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें वांछित सहयोग एवं सम्मान नहीं देंगे जिससे परिवार में अशांति रहेगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो के लिए सामान्यतया साझेदारी अनुकूल होगी। लेकिन साझेदारी को सोच समझकर करना चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा ज्योतिष या तंत्र मंत्र का ज्ञान भी रहेगा। इस क्षेत्र में आपको इच्छित मान सम्मान एवं सफलता भी प्राप्त होगी तथा समय समय पर आप इससे लाभान्वित होते रहेंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति की अवश्य प्राप्ति होगी या किसी वृद्ध संबन्धी की जमीन जायदाद भी आपको मिल सकती है। आप सर्वप्रकार से खुशहाल रहेंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामी बनेंगे। साथ ही आपके एक से अधिक आवास स्थल हो सकते हैं। शादी से आपको लाभ होगा तथा आपकी पत्नी किसी धनाढ्य परिवार से सम्बन्धित होगी अथवा वे किसी कार्य क्षेत्र में रत हो सकती है। साथ ही आपके ससुराल वाले आपको अपेक्षा से अधिक धन एवं अन्य कीमती वस्तुएं प्रदान करेंगे ।

बीमा आदि करवाने से भी आपको समय समय पर लाभ हो सकता है लेकिन दीर्घावधि की अपेक्षा यदि आप लधुअवधि के बीमे करवाएं तो इसमें आपको शीघ्र एवं प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा सम्बधित वस्तु या प्राणी की पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी आदि के द्वारा कोई हानि नहीं है यद्यपि जीवन में एक बार चोर अवश्य आपके यहां आएंगे लेकिन वे कोई कीमती वस्तु को चुराने में असफल रहेंगे क्योंकि आप पूर्व ही सतर्क हो जाएंगे तथा बहुमूल्य वस्तुओं की विशेष सुरक्षा करेंगे। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगे तथा धार्मिक एवं पारिवारिक रीति रिवाजों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप प्रतिदिन भगवान का ध्यान अवश्य करेंगे परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी । क्योंकि आपके विचार से यह पद्धति कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए बनाई गई है। धार्मिक कार्यों पर व्यय करने में भी आप अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगे जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि या योगादि के भी इच्छुक रहेंगे तथा तंत्र मंत्र में भी यदा कदा रूचि का प्रदर्शन करेंगे। तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि करने में भी आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। दूसरे शब्दों में आप भीड़ से तथा पूजा आदि संस्कारों से घबराहट की अनुभूति करते है। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा। साथ ही धार्मिक आध्यात्मिक, तंत्र मंत्र, ज्योतिष तथा इनसे सम्बन्धित शास्त्रों का अध्ययन करने में रूचिशील रहेंगे।

आप में अन्तर्प्रज्ञा शक्ति रहेगी तथा भविष्यवाणी आदि करने में भी आप समर्थ रहेंगे। आप उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा इससे समाज में आपको आदर तथा ख्याति प्राप्त होगी । यदि आप कहीं विकट परिस्थितियों में फंसेंगे तो भाग्य बल से इससे सुरक्षित हो जाएंगे। लम्बी दूरी की यात्राओं से आप लाभ तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित करेंगे। पौत्रों से आपको खुशी एवं सुख प्राप्त होगा साथ ही समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। आपके पूर्वजन्म के पुण्य इस जन्म में आपको खुशहाली प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही केतु भी दशम भाव में ही स्थित है। वृष राशि भूमितत्व एवं केतु वायुतत्व ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होने के साथ साथ बौद्धिक क्रिया से भी युक्त रहेगा। इसमें आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा यदा कदा इसमें के भी इच्छुक होंगे जिससे आपको लाभ होगा।

केतु की दशम भावस्थ स्थिति के प्रभाव से आजीविका की दृष्टि से आपके लिए वायु सेना, एयर लाइन्स, रासायनिक क्षेत्र, खनिज एवं खान विभाग, कृषि विभाग, राजनीति, होटल प्रबंधन आदि का क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों या विभागों में कार्य करने से आप इच्छित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए लोहे का कार्य, इलैक्ट्रोनिक्स उपकरण, ट्रेवल एजेंसी, प्रोपर्टी डीलर, खेती, बागवानी, एवं अन्य श्रमसाध्य कार्यो से आपको उचित लाभ होगा। साथ ही आयात निर्यात संबंधी कार्य या व्यापार से भी आप इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। अतः यदि आप व्यापार के क्षेत्र में उतर रहे हों तो इच्छित लाभ, धन एवं सफलता प्राप्त करने के लिए आपको उपरोक्त कार्यो या वस्तुओं का ही व्यापार करना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं से आप सुरक्षित रहेंगे तथा निरंतर लाभार्जन भी होता रहेगा।

दशम भाव में केतु के प्रभाव से आपको जीवन में मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। आप को सामाजिक मान प्रतिष्ठा भी मिलेगी एवं यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा एवं सभी सामाजिक लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके साथ ही आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था अथवा क्लब आदि के भी पदाधिकारी हो सकते है। इससे आपके प्रभाव में पूर्ण वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त भाग्यबल से भी आपको प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी शिक्षित एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा स्वभाव में तेजी रहेगी। लेकिन सामाजिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने में उनकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपके प्रति वे पूर्ण चिंतित रहेंगे तथा शिक्षा दीक्षा की उच्चस्तर पर व्यवस्था करेंगे। इससे आपको कार्यक्षेत्र में शीघ्र ही सफलता एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही पिता के प्रभाव से भी आप उन्नति करेंगे। आप स्वयं भी एक परिश्रमी व्यक्ति होंगे अतः कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। इसके साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे लेकिन नैसर्गिक पाप ग्रह केतु के प्रभाव से यदा कदा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते हैं। अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म के समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। इसके प्रभाव से आप महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन हमेशा उमंगो से युक्त रहेगा तथा आपकी मानसिक इच्छाएं समय समय पर आपके परिश्रम तथा योग्यता से पूर्ण होती रहेंगी। आप एक चतुर व्यक्ति होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर हमेशा अग्रसर रहेंगे। आप सक्रिय व्यक्ति होंगे तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने में आप तत्पर रहेंगे। साथ ही लेखन कमीशन संवाददाता, ज्यौतिष तथा व्यापार से इच्छित धन लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्हीं क्षेत्रों में आपको लाभ होगा। आपका बड़ी बहनों के प्रति पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे पूर्ण सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। साथ ही भाइयों से भी नैतिक सहयोग मिलता रहेगा।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली के आप सम्मानीय सदस्य समझे जाएंगे तथा आपके सभी मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे। मित्रों के बीच में आपको नवीन आनन्द की प्राप्ति होगी तथा आपस में विषय विशेष के प्रति भी तर्क होंगे जिससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। साथ ही सामाजिक जनों के विषय में भी आप चिन्तित रहेंगे तथा उनके परोपकार संबन्धी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे एवं मानवता के आदर्श गुणों से भी युक्त रहेंगे। आप जिस क्षेत्र में रहते है वहां के लोगों तथा पड़ोसियों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा सभी लोगों के मध्य आप की प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी। आपको समय समय पर विशेष सम्मान भी मिलते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगे तथा उनसे संबंध स्थापित करके आनन्द की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आप सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया भाग्यशाली होंगे तथा आर्थिक दृष्टि से आपके कई स्रोत होंगे जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आप किसी संस्था या सरकार में किसी उच्च पद को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपको महत्वपूर्ण कार्यों पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा कम महत्वपूर्ण कार्यों को अपने सहायकों के लिए छोड़ देना चाहिए जिससे वे अपने आपको आपसे उपेक्षित न समझें।

आपका व्यय अधिक मात्रा में रहेगा फलतः अवस्था के साथ साथ यदा कदा आर्थिक परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं आप एक स्वच्छंद प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगे तथा बिना अपनी स्थिति देखे हुए कई बार अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएंगे। इससे आपके मान सम्मान में वृद्धि तो अवश्य होगी लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः आपको इस आदत पर नियंत्रण रखना चाहिए। अपने मान सम्मान की रक्षा के लिए आप कभी कभी अनावश्यक व्यय करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इससे भी आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी अतः आपको ऐसे व्ययों पर अंकुश रखना चाहिए। युवावस्था में आपको कई प्रकार के उतार चढ़ाव देखने पड़ेगें लेकिन व्यय आप जो भी तथा जहां भी करेंगे वह अच्छे कार्य के लिए ही होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी। साथ ही इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या विभागीय के कार्य से होंगी साथ ही विदेश भ्रमण के भी योग बनते है तथा काफी समय तक आपका प्रवास हो सकता है। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि अष्टम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि सप्तम भाव में प्रवेश करेगी। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुदशम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि एकादश भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वादश भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि एकादश भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला परिणाम देने वाला रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए नई योजना भी बनाएंगे जिससे व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी तथा इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

29 मार्च के बाद अष्टम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्यों में कुछ रुकावटें आ सकती हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी संभाल लेंगे। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। एकादश स्थान के गुरुआय बढ़ा सकते है। आपको बड़े लोगों या वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से इस वर्ष द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न एवं आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा परन्तु आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

मई के बाद एकादश स्थान में गुरुके गोचरीय प्रभाव से रुका हुआ धन मिल सकता है, साथ ही आपके धनागम में भी वृद्धि होगी, जिससे आप उचित बचत करने में सफल रहेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद प्रेम प्रसंग में सफलता प्राप्त होगी। तृतीय स्थान में गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अत्यधिक परिश्रमी होंगे एवं अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य ही रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से मौसम जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। मानसिक चिंता जैसी छोटी मोटी परेशानियां होती रहेंगी।

14 मई के बाद गुरुग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहें। जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आप का स्वास्थ्य पूर्ण रूप से अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को परीक्षा में सफलता मिल सकती है।

मई के बाद पंचम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्षारम्भ में आप जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। मई के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। यात्रा के अंतराल में या वाहनादि चलते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे, परन्तु मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढेगा। आप भगवान की पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि अच्छे कार्य संपन्न करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक मंगलवार हनुमान जी को चोला चढाएं एवं हनुमान चालीसा का पाठ करें।

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यरहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल मेंजल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न हीजल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरू हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धसामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है।जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आजाएंगे जिससे आपका बजटबिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि सेयह वर्षसामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगेपरन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशहो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुबिधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्टस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगा। आपको

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैंतो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होंगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नही आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते है। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उतरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नही रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती हैं।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने मे आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपका भाग्य साथ देगा। व्यावसायिक उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा।

29 मार्च से सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य में सफल होंगे। गुरु के प्रभाव से आमदनी के नये स्रोत खुलने की उम्मीद है। 25 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी व कार्य स्थल पर मान सम्मान भी बढ़ेगा। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में सफल रहेंगे परन्तु द्वितीयस्थ मंगल के कारण आपके पारिवारिक खर्चे भी बढ़ेंगे। 29 मार्च के बाद रत्नाभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके पिता की अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

25 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का

बर्ताव ठीक नहीं रहेगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उनकी शिक्षा में भी रुकावटें उत्पन्न कर सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि से अचानक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी। 29 मार्च से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

25 अगस्त से आपको खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा। चिकनाईयुक्त व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करना चाहिए। कुछ बेवजह की यात्राएं और काम का बोझ आपको थका सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करा सकती है।

छठे स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। तीर्थ यात्रा पर जाने की योजना भी बन सकती है। 25 अगस्त के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है जिसके कारण आपका

मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप कोई विशेष अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में वितरित करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत अवरोध आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा आपका समय फिर से अनुकूल हो जाएगा और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे।

जो व्यक्ति नवीन रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अप्रैल के बाद आपको रोजगार से सम्बन्धित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। 04 फरवरी के बाद नए निवेश करना सही नहीं होगा। भूमि, भवन एवं वाहनादि पर निवेश न करें नही तो आपका पैसा डूब सकता है। इस समय आप इस बात पर ध्यान दें कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए और एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानिया तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद चतुर्थस्थ राहु आपको घरेलू जीवन में कुछ चिंताएं दे सकता है जिससे परिजनों के बीच

सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होंगी। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निबटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

आपके माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अचानक ही उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मई के बाद आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपकी एक अगल पहचान होगी।

संतान

वर्ष की शुरुआत संतान के लिए शुभ नहीं है। लग्न स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी दूसरी संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वह अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद आप अपने आप को तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जा की वृद्धि होगी।

मई से आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम करना या सुबह-सुबह टहलने जाना। यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया है तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थ स्थान में राहु एवं गुरु की युति माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनायेगी।

यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप कोई विदेशी भाषा सीखने की तरफ आकर्षित होंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्तम योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का भी अवसर प्राप्त होगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 17 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान

पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 17 अप्रैल से आप अपने कार्य-व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। 18 फरवरी से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।

9 अगस्त से व्यावसायिक स्तर पर समय आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए पुरुस्कृत भी किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। 18 फरवरी के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

9 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। यह समय आपके लिए अत्यंत लाभकारी रहेगा। यदि अनापेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिएगा मत। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। दशमस्थ शनि पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी अवसर आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भघरेलू वातावरण के लिए अनुकूल है। पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है अतः परिवार से जुड़े हर

मामलों में आपको सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ है।

9 मई से घरेलू वातावरण के लिए समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान होगा क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। 15 अक्टूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा किन्तु आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं रहेंगी। 18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। यह समय आपकी संतान के लिए शुभ होगा।

गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की लिहाज से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। पारिवारिक क्लेश के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। आपके जीवन में इस साल खुशी के पल भी आएंगे। स्वस्थ्य रहने के लिए आपको चाहिए कि आप योग और ध्यान का सहारा लें। प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे।

15 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी और आप पूर्णरूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष अनुकूल बना रहेगा। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत बढ़िया है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

15 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का योग बन रहा है। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती

रहेंगी। 18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के शुरु में आपके धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 18 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रूचि बढेगी। 14 जूल के बाद आप पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा कर पुण्यरर्जन भी करेंगे।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन दीपक जलाएं और महालक्ष्मी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं दशम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुपंचम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भश्रेष्ठतम रहेगा। बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप आपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे।

23 अक्तूबर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से अपना विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी। गुरु के गोचर के बाद क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहें। खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

12 अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलने की सम्भावना है। लॉटरी, शेयर इत्यादि से भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। कर्जे से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि से घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में वैचारिक मतभेद से आप मानसिक अशान्ति महसूस सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। 5 मार्च के बाद परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफीअनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान मेंबच्चों का प्रवेश हो जाएगा।

5 मार्च से गुरु का गोचरप्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकीशिक्षा-दीक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। बच्चोंके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपको छोटी-मोटी बीमारियां हो सकती हैं। मई के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को उत्तमबनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यवसायी इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें सफलता भी होंगे।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 5 मार्च से समय आपके लिए काफीशुभ हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के कारण वर्षारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राओं के भी प्रबल योग बन रहे हैं। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

गुरु के गोचर के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। यात्रा के दौरान किसी से बहुत अच्छी मित्रता होगी। 12 अगस्त के बाद धार्मिकयात्रा का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक धार्मिक कार्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना, तीर्थ स्थलों की यात्रा इत्यादि करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय अति उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। अष्टम स्थान के केतु आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकते हैं।

आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा। अपने कार्य व्यवसाय में रिश्तेदारों के साथ साझेदारी न करें। नहीं तो उनके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण बीमारी दूर करने में संचित धन का व्यय हो सकता है। गुरु ग्रह का गोचर अशुभ होने से धनागम में रुकावट व आर्थिक तंगी का योग बना हुआ है। परन्तु 18 मार्च के बाद अचानक व्यापारिक उन्नति होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी व तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न करेंगे। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ें या विवाद में न उलझें और अपनी वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें, नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय धर्म पत्नी के

साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। प्रेम संबंध बहुत ही मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस समय के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लपरवाही न करें। आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी ग्रस्त होंगे। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। यदि पहले आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित करने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष की शुरुआत करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहेगी। परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको 18 मार्च के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

शिक्षार्थी इस समय योग्यता के अनुसार सफलता पाने में सफल रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बड़ी कोई अड़चन नहीं आयेगी। अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि रहेगी। विदेशी भाषा सीखने की ओर आकर्षित होंगे। आपका उत्साह व साहस बना रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 18 मार्च से आप अपनी पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्राओं से आपको लाभ होगा।

वर्षान्त में नौकरी करने वाले व्यक्तियों के स्थानान्तरण के योग बन रहे हैं। परन्तु यह बदलाव आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 18 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं द्वादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहें है तो आपके लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगो को अच्छा लाभ मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

जुलाई के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। किसी प्रकार का जोखिम मोल न लें नहीं तो व्यापार में हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम भाग आर्थिक दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। एकादशस्थ शनि के कारण आर्थिक स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है, परन्तु द्वितीयस्थ राहु के कारण अचानक कुछ व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। अनावश्यक खर्चो पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वर्ष का पूर्वार्द्ध सम्पन्नता से गुजरेगा।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। धोखा या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध सामान्य रहने वाला है। द्वितीय स्थान का राहु प्रतिकूल होने के कारण आपको घरेलू मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर

झगड़ा या विवाद में नही पड़ना चाहिए। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने के लिए आपको अपने जीवन साथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। एकादशस्थ शनि के कारण बड़े भाइ-बहनों के लिए समय काफी शुभ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मदभेद होने की संभावना बन रही है। पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है परन्तु माता के लिए शुभ है। आपका एवं आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने सेघरेलू माहौल ठीक नहीं सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण यह समय आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। दूसरे संतान के लिए भी यह वर्ष ज्यादा अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बढ़िया रहेगा। आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान का शनि धीरे-धीरे आपकी शारीरिक ऊर्जा कम कर सकता है, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। अतः राहु ग्रह की शान्ति स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के पूर्वार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

यदि आप नौकरी करते हैं तो साल का उत्तरार्द्ध कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। लोग आपके विरूद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाये जा सकते हैं,

जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है और आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का पूर्वार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। मार्च के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश के शनि आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा और नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ॐ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(17/01/2016 - 17/01/2036)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 17/01/2016 को आरम्भ और 17/01/2036 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जो दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का हो जाता है। यह कला, संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग तथा सुखमय, जीवन का द्योतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्मकुण्डली के षष्ठ भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है हानि, फिजूलखर्ची, कड़ी मजदूरी, अनुदान, पारिवार में फूट, धोखा, दुर्भाग्य, कैद, हत्या, कपट, पैर, बायीं आँख, शयन सुख, ऋण और विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है जो आपके अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है तथा कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको नहीं होगी। आपको सभी प्रकार का आराम और आनन्द प्राप्त होगा।

अर्थ संपत्ति :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव के कारकत्व की प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आप उपार्जन तथा चल-अचल संपत्ति अर्जित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने जन्म स्थल से दूर जा सकते हैं।

व्यवसाय :

अपने व्यावसायिक जीवन में आप एक जगह से दूसरी जगह जाते रहेंगे और एक बैरागी जीवन व्यतीत करेंगे और अन्ततः मोक्ष प्राप्त करेंगे। आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धार्मिक या ऐसी किसी अन्य संस्था के लिए काम करेंगे जहाँ आपकी आध्यात्मिक मानसिकता प्रबलित होगी।

परिवारक जीवन :

आप भावुक तथा विपरीत लिंग के लोगों की ओर आकृष्ट होगें। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आपके जीवन-साथी आपका सहयोग करेंगे और आप घर-परिवार के मैत्रीपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह अवधि उत्तम शिक्षा के लिए अनुकूल होगी। आप साहित्यक गतिविधियां जारी रखेंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - राहु
(19/03/2023 - 19/03/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 17/01/2016 को प्रारंभ होकर 17/01/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 19/03/2023 को प्रारंभ होकर 19/03/2026 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। राहु शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 10वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घरेलू जीवन से असंतुष्ट, अप्रसन्न और विचलित रह सकते हैं। मित्रों का सहयोग प्राप्त करना कठिन होगा। माता-पिता से, विशेषकर माता से लाभ हो सकता है। अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(19/03/2026 - 17/11/2028)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/01/2016 को आरंभ हुई थी और 17/01/2036 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 19/03/2026 को प्रारंभ होकर 17/11/2028 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 12, 2, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप पापकर्म में प्रवृत्त हो सकते हैं मगर दिखावा ऐसा करेंगे कि बहुत धार्मिक स्वभाव के हैं। विधवा स्त्रियों से संपर्क हो सकता है जिससे साख की क्षति होगी। दयालु होंगे मगर अप्रसन्न रहेंगे। प्रत्येक कदम उठाने से पूर्व गंभीर विचार आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(17/11/2028 - 17/01/2032)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 17/01/2016 को प्रारंभ हुई थी और वद 17/01/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 17/11/2028 को प्रारंभ होकर 17/01/2032 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

एकादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 1, 5, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। आपके बहुत से कर्मचारी हो सकते हैं, आय उत्तम होगी। सरकारी नौकरी या सरकार के माध्यम से आय संभव है।

आपके मित्रों की संख्या कम हो सकती है मगर समाज में सम्मान मिलेगा। राजनीति में भी भाग ले सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा;

- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,केतु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

सत्कीर्तियुक्त योग

लाभेशे कर्मभावस्थे कर्मेशे बलसंयुते।
देवेन्द्रगुरुणा दृष्टे सत्कीर्त्तिसहितो भवेत्।।
।। बृहद् पाराशरहोराशास्त्र ।। अ. 12/श्लोक

यदि जन्मकुण्डली में लाभ का स्वामी कर्मस्थ हो तथा कर्मेश बली हो तथा उस पर गुरु से दृष्ट हो तो जातक सत्कीर्ति से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध,गुरु योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सत्कर्मी प्राणी होकर सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको

अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु — योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु — योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु — योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-11 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : केतु,बुध — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 302-6 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश सप्तमेश और राशीश द्विस्वभाव राशि में हों तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि — योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका दो विवाह संभाव्य है।

उच्च सुखादि योग

चन्द्रो व्ययाधिपो धर्मलाभमन्त्रेषु संस्थितः ।
स्वोच्चस्वर्क्षनिजांशे वा लाभधर्मात्मजांशके ।
दिव्यागारादिपर्यङ्को दिव्यगन्धैकभोगवान्।
परार्घ्यरमणो दिव्यवस्त्रमाल्यादिभूषणः।
परार्घ्यसंयुतो वित्तो दिनानि नवति प्रभुः ।।
।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा व्ययेश होकर 5-9-11 वें भाव में हो या अपनी उच्च राशि, अपनी राशि, धन भाव के नवांश में हो अथवा लाभ, नवम पंचम के नवांश में हो तो दिव्य भवन, शक्रया, गन्ध, दूसरे के द्रव्य को भोगनेवाला होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र — योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम भवनशक्रयादि सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि,राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,केतु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।